जून-२०२३ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जून-२०२३

सज्जन सिंह जी पढ़ लियो,
वेद पाठ ऋषिवर से।
दर्शन और स्मृति मनु की,
प्रत्यक्ष करी ऋषिवर से।
जीवन सारो बदल गयो,
आ सम्पर्क में ऋषिवर के,
बड़े प्रेम से ग्रहण कियो,
सत्यार्थ प्रकाश ऋषिवर से।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १४०

भारत के सरताज

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२४
आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी
विक्रम संवत्
२०८०
दयानन्दाब्द
१९९

June - 2023

समाचार २९

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०२/२३
०७	सत्यार्थ मित्र बनें
१३	माननीय सरसंघचालक का वक्तव्य
१४	राष्ट्रीय एकता और मत मतान्तर
१७	समस्याओं को चुनौती समझिए!
१९	महर्षि दयानन्द का भक्तिवाद
२४	गंगा अशुद्ध हो गई है
२६	पुदीना (बहु उपयोगी औषध)
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की
३०	सत्यार्थ पीयूष- वेद मनुष्यमात्र ...

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १२ अंक -०२

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

भय से मुक्ति

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तराद्धराद्भयं नो अस्तु।।
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नःसर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।। - अथर्ववेद १९/१५.५/६

अर्थात्- यह अंतरिक्ष, यह द्युलोक, यह पृथ्वी सब मुझे अभय बना दें। पीछे, आगे, ऊपर, नीचे सब ओर से मैं अभय रहूँ। मित्र-अमित्र, ज्ञात-अज्ञात, रात-दिन तथा सभी दिशाएँ मित्र बन कर अभयत्व प्रदान करें।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद चारों वेदों की ऋचाओं में अभय की इच्छा और आवश्यकता बताई गई है। गीता में भी यही भावना है-

हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तः यः स च मे प्रियः।

अर्थात्- मुझे वह भक्त अत्यन्त प्रिय है, जो हर्ष, अमर्ष तथा भय के वेगों से अपने को मुक्त रख सके।

महर्षि दयानन्द ने कहा कि- मनुष्य उसी को कहना चाहिए जो मननशील होकर दूसरों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी यदि बलवान हो तो उससे भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल हो तो भी डरे।

स्वामी विवेकानन्द लिखते हैं कि - बल पुण्य है और निर्बलता पाप है। यदि किसी धर्म की शिक्षा देनी है तो अभयत्व रूपी धर्म की शिक्षा देनी चाहिए। महात्मा गाँधी कहते हैं कि बल तो निर्भयता में है, हाड-मांस बढ़ जाने में नहीं।

लोक और इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं, जब भय और अज्ञान के कारण अपने कर्त्तव्य को भी भूल गये। कुरुक्षेत्र के युद्ध में धनुर्धारी अर्जुन अज्ञान (मोह) के कारण आत्मविस्मृति की अवस्था में पहुँच गए, तब योगेश्वर कृष्ण ने गीता के उपदेश द्वारा उन्हें आत्मस्मृति कराई। रामायण में रामभक्त हनुमान समुद्र संतरण से भयभीत हैं और अपनी शक्ति व सामर्थ्य को भूलकर अपने कर्त्तव्य से दूर हो रहे हैं, किन्तु जब उन्हें उनकी शक्ति का बोध कराया गया तब सभी भय और सन्देह दूर हो गये और देखते ही देखते वे समुद्र लांघ गये।

गर्दभ सिंह की एक लोक कथा है। किसी वन में एक बुढ़िया टूटी-फूटी झोपड़ी में रहती थी। वर्षाकाल में छत से पानी टपकने लगा। वह चिन्तित होकर बोली- इस घने जंगल में मुझे न शेर से डर है, न चीते से, न बाघ से, न हाथी से, डर है तो बस इस टपके से।

उसी समय वहाँ से एक शेर जा रहा था, उसने सुना और समझा कि यह टपका मुझसे से अधिक बलवान है, तभी यह बुढ़िया ऐसा कह रही है। वह वहीं चुपचाप डरकर खड़ा रहा। उसी समय वहाँ एक धोबी अपना गधा ढूँढता हुआ आ गया, जहाँ टपके से डरा हुआ वनराज शेर खड़ा था। धोबी अंधेरे में उसे गधा समझकर, गले में रस्सी डालकर उसे डण्डे से मारता हुआ अपने घर ले चला। शेर ने मन में सोचा कि यही वह टपका है, जिससे बुढ़िया डरती है, अतः

चुपचाप धोबी के डण्डे खाता हुआ चलता रहा। धोबी ने घर ले जाकर उसे दूसरे गधों के साथ बाँध दिया। सुबह हो रही थी, जहाँ से दूसरा शेर जा रहा था, उसने शेर को गधों के साथ बंधा हुआ देखकर पूछा- वनराज! तुम यहाँ क्यों बंधे हो? पहले शेर ने कहा- चुप रहो, यह टपका तुम्हें भी बाँध देगा।

दूसरा शेर समझ गया कि यह टपके के काल्पनिक भय से अपने स्वरूप को भूल गया है। उसने वहाँ भरे हुए पानी में उस वनराज को उसका स्वरूप दिखाकर कहा- इस पानी में झांकर देखो कि तुम कौन हो? दूसरे शेर के द्वारा आत्मबोध कराए जाने पर उसका डर दूर हुआ और वह जोर से दहाड़ा और अपने स्वरूप में आ गया।

इसी आत्मविस्मृति का एक मनोरजंन संस्मरण स्वामी विवेकानन्द ने भी लिखा है- मै प्रातःकाल के भ्रमण के लिए सुबह अंधेरे में ही जाया करता था। एक बार रास्ते में कुछ कुत्ते सोते हुए दिखाई दिए। मैंने सोचा कुत्ते का काटना बुरा होता है, इसलिए बचकर जरा चाल तेज कर दी। कुत्ते समझ गए कि यह हमसे डर कर तेजी से जा रहा है अतः वे सब फड़फड़ा कर उठे और भौंकते हुए मेरे पीछे भागने लगे। स्थिति यह हो गई कि मैं हाथ में डण्डा लिए उनसे बचने के लिए तेजी से भाग रहा था और वे मुझे भगाए जा रहे थे। कुछ दूर जाने पर मैंने सोचा, अरे विवेकानन्द! तू तो संसार को अभय का सन्देश देने आया है और तू ही कुत्तों के डर से भागा जा रहा है। सोच तू कौन है? यह विचार आते ही मैं खड़ा हो गया, कुत्ते भी जहाँ थे वहीं खड़े हो गये। मैंने पलटकर उनकी ओर मुँह करके उन्हें डण्डे से डराया तो वे सब डरकर उलटे भागने लगे। अब वे मुझसे डरकर भाग रहे थे।

अभय प्राप्ति के लिए प्राणीमात्र में मैत्री भावना परमावश्यक है। **सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु**– सभी दिशाएँ (दिशाओं के प्राणी) मेरे मित्र बन जाएँ, जब कोई पराया नहीं रहा, शत्रु भी मित्र बन गए और इस संसार में **वसुधैव कुटुम्बकम** की भावना स्थापित हो गई तो किसको किससे भय होगा? उपनिषद्कार कहते हैं- **द्वैताद् भयं भवति।** द्वैत भावना से भय होता है, जब अपना पराया नहीं रहा तो भय कैसा?

यतो यतः समीहते ततो नोऽअभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥

अर्थात् हे जगदीश! जहाँ-जहाँ सम्यक् चेष्टा है, वहाँ-वहाँ से हमें अभय कर दो। हमारी प्रजाओं के लिए कल्याण और पशुओं के लिए अभय कर दो।

वह परमात्मा **भयानां भयम्**– भयों के लिए भय है, सर्वशक्तिमान है, तेजपुंज है, बल और ज्ञान का भण्डार है। उसकी (मैत्री) समीपता हमें अभय क्यों नहीं बनाएगी। बुझा हुआ कोयला काला ही नहीं होता, सम्पर्क में आने वाले को भी काला कर देता है, किन्तु वह जब अग्नि के सम्पर्क में आकर लाल हो जाता है तो ज्योति का पुंज बन जाता है। यही बात जीव के साथ है। परमात्मा रूपी अग्नि के सम्पर्क में आकर वह भी तेजयुक्त हो जाता है। यही शक्तिशाली की मित्रता है। संत कबीर ने कहा है-

जहं अभय तहं भय नहिं, जहं भय तहं हरि नाहिं।
कह्यो कबीर बिचारिकै, संत सुनो मन मांहि॥

जहाँ वह अभय (परमात्मा) है, वहाँ भय नहीं रहता और जहाँ भय है वहाँ हरि निवास नहीं करते। हे सन्तो! कबीर ने विचार कर यह बात कही है, इस पर मन में विचार करो।

शक्तिशाली की मित्रता कैसे अभयदान देती है, एक कथा है- किसी नगर में एक सेठजी रहते थे, उनके पड़ोस में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था। उस धार्मिक ब्राह्मण ने विद्वानों के सत्संग में तीर्थ यात्रा पर जाने का निश्चय किया और अपने घर का थोड़ा सा कीमती सामान सेठजी के पास ले गया और बोला- सेठजी! मैं तीर्थयात्रा पर जाना चाहता हूँ, इस गठरी में थोड़ा सा सामान है, आपके पास धरोहर में रख लें तो निश्चिन्त होकर जा सकूँगा, आकर ले लूँगा। सेठजी ने कहा- वहाँ उस कमरे में दूसरों की भी धरोहर रखी है, वहीं रख दो, आकर वहीं से ले लेना। ब्राह्मण ने सामान रखा और तीर्थयात्रा पर चल गया।

सेठजी की नीयत बदल गई और ब्राह्मण के जाते ही सेठजी ने ब्राह्मण का कीमती सामान निकाल कर उस गठरी में पत्थर भर दिये। जब ब्राह्मण लौटकर आया तो अपना सामान सेठजी से माँगा। सेठजी ने कहा- जहाँ तुमने अपनी गठरी रखी थी, वहीं से ले लो। ब्राह्मण ने देखा तो, यह क्या? कीमती सामान के बदले उसमें पत्थर भरे थे। उसने दुःखी होकर सेठजी से पूछा तो सेठजी ने कहा कि जो तुमने रखा था वही होगा और डांट कर भगा दिया।

उस देश का राजा बहुत न्यायप्रिय था अतः ब्राह्मण राजा के पास गया। राजा ने सब सुना और कहा- यदि सचमुच तुम्हारी सम्पत्ति गठरी में होगी तो तुम्हें अवश्य मिल जाएगी। तुम अभी घर जाओ और कल जब मेरा जुलूस तुम्हारे घर से के सामने से निकले तब तुम बाहर निकल कर खड़े हो जाना और फिर मैं जैसा कहूँ वैसा करना।

अगले दिन राजा अपने हाथी पर सवार होकर बड़ी शान से उसी मार्ग से निकला जहाँ ब्राह्मण अपने घर के सामने खड़ा था। राजा ने हाथी रुकवाया और उस ब्राह्मण को हाथी पर अपने पास बैठा लिया। यह दृश्य वह सेठ भी देख रहा था। उसने सोचा कि इस ब्राह्मण की मित्रता तो राजा से है, यदि इसने मेरी बेईमानी की बात राजा को बता दी, तो राजा कठोर दण्ड देगा अतः ब्राह्मण को सब सामान लौटा देना चाहिए। राजा ने ब्राह्मण को थोड़ी दूर ले जाकर उतार दिया और घर जाने को कहा। जैसे ही ब्राह्मण घर पहुँचा, सेठ ने हाथ जोड़कर कहा- मित्र! यह लो, तुम्हारा सामान घर पर ही पड़ा था, कभी और कोई काम हो तो बताना।

यदि एक छोटे से राजा की मित्रता उस सेठ से ब्राह्मण को उसकी धरोहर दिला सकती है तो राजाओं के राजा परमेश्वर की मित्रता संसार में क्या नहीं कर सकती? अभय प्राप्ति की यही वैदिक शिक्षा भक्त को अभय प्रदान करती है। हम सब परस्पर मैत्री का हाथ बढ़ाकर भयमुक्त हो सकते हैं जिस तरह ईश्वर की मैत्री से अभय हो जाते हैं। यही अभय प्रभु के द्वार का, आध्यात्म मार्ग का प्रथम सोपान है।

लेखिका- डॉ. रोचना सुभाषचन्द्र भारती
साभार- अमृत मन्थन

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०२/२३

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (चतुर्दश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ बि	१	१ ह		२ ई	२	२ र	३	३ त
	३	३ रा	३		४ बु	४	४ न	४
५	५ दा		६ कु	६		७	७	७ न

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. कसाई मुसलमान हलाल करते समय किस वचन को पढ़ते हैं?
२. जो कुरान और पैगम्बर को ना माने, वे काफिर हैं। ऐसे वाक्य से पता चलता है कि कुरान ..... नहीं है?
३. म्लेच्छों के लिए घोर नरक बना है, ऐसा किस ग्रन्थ में लिखा है?
४. मुसलमान स्वयं को बुत परस्त नहीं मानते किन्तु स्वयं को कहते हैं?
५. किसने मूसा को किताब दी?
६. बहिश्त से क्या तात्पर्य है?
७. मौलवी फैजी ने बिना नुक्ते का क्या बनाया?

''विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०२३

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण :

AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001
में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

डॉ. इन्द्रा व्यास
उदयपुर

श्री अभ्युदय आर्य
गाजियाबाद

श्री अतुल अग्रवाल
जयपुर

श्रीमती सुमन सूद
कंडाघाट (हि.प्र.)

श्रीमती पुष्पा देवी
दिल्ली

डॉ. पूनम सिंह
कोटा

श्री प्रबोध चन्द सूद
कंडाघाट (हि.प्र.)

सुश्री स्वाती आर्या
उदयपुर

आत्म निवेदन

अखबारों की सुर्खियाँ नहीं स्वस्थ समाज चाहिए।

लॉर्ड मैकाले वह नाम है जिसने भारतवर्ष में ब्रिटिश राज के दौरान एक ऐसी व्यवस्था कायम की जिसके द्वारा कि अंग्रेजों के शासन के समाप्त होने के बाद भी भारतीय मानसिक रूप से पश्चिम के सिद्धान्तों, वहाँ की जीवनशैली और विचारों के अनुगामी बने रहें और ऐसा उसने शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करके, आंग्ल भाषा को अत्यन्त प्रबल स्थान प्रदान करके और इस सब के माध्यम से विद्यार्थियों के मन में अपने अतीत के प्रति हीन भावना भरने और पाश्चात्य ज्ञान के प्रति, उनके रहन-सहन के प्रति ,अत्यन्त सम्मान और आकर्षण पैदा करने का काम किया।

अनेक महापुरुषों द्वारा समय-समय पर चेतावनी दिए जाने के बावजूद दुर्भाग्य देश का यह रहा कि मैकाले की यह योजना पूर्णतः सफल रही। सम्भवतः उसने जितना सोचा उससे भी ज्यादा। परिणाम यह रहा कि भारत के नव-निर्माण की बागडोर जिन लोगों के हाथ में आई और आज भी जो लोग अभिजात्य वर्ग के सदस्य हैं जिनके हाथों में देश व समाज की दशा व दिशा निर्माण करने का कार्य है वे स्वयं पूर्णतः पाश्चात्य जीवनशैली के गुलाम होते हुए सम्पूर्ण देश में वही विचार थोप देना चाहते हैं। वे जानते हैं कि पाश्चात्य जीवनशैली से आज वहाँ के लोग त्रस्त हैं। वहाँ कितनी भी यौन स्वच्छन्दता है पर आज वहाँ पर यौन अपराध और हिंसा चरम पर हैं। परन्तु हमारा अभिजात्य वर्ग इस पर विचार करने को तैयार नहीं है। पिछले दिनों भारत की समस्त सामाजिक व्यवस्थाओं को, मान्यताओं को, सोच को, ठोकर मारते हुए लिव-इन-रिलेशनशिप को मान्यता दी गई। समाज व कानून को व्यभिचार के बन्धनों से मुक्त कर दिया और अप्राकृतिक काम सम्बन्धों को स्वीकृति दे दी गई, न केवल स्वीकृति दे दी गई परन्तु ऐसा लगता है कि उसे महिमामण्डित करने का प्रयास किया है। पिछले एक-दो दशक में उक्त सारे काम हुए जिनके बारे में कभी भारतीय मनीषा सोच भी नहीं सकती थी। होटलों के विज्ञापनों में **Unmarried couples are allowed** का होना इसे प्रमाणित करता है।

भारतीय मनीषा ने काम सम्बन्धों को विवाह के माध्यम से एक स्त्री-पुरुष युगल में सीमित कर रखा था क्योंकि स्वच्छन्द यौनिक इच्छाएँ समाज में अव्यवस्था हेतु निश्चित रूप से कारक बनेंगी। परन्तु भारत का अभिजात्य वर्ग समाज की परवाह नहीं करता। उनके निकट 'लिबर्टी' का यही अर्थ है और इसी को वह प्रगतिशीलता मानते हैं। पुरातन मान्यता और व्यवस्थाओं को चुनौति देने वाले हर नैतिक-अनैतिक सोच और कार्यकलापों

का स्वागत वे अतीव उत्साह से करते हैं। इसी क्रम में माननीय उच्चतम न्यायालय में कुछ याचिकाएँ आई हैं जिनमें कहा गया है कि समलैंगिक सम्बन्ध रखने वाले पार्टनर्स को विवाह करने की अनुमति दी जाए। प्रतीत ऐसा हो रहा है जैसे माननीय मुख्य न्यायाधीश महोदय को अत्यन्त शीघ्रता से इस पर अपनी सहमति की मोहर लगाने की इच्छा है।

इस निवेदन में हम यह कहना चाहेंगे कि पहले ही एलजीबीटी क्यू सम्बन्धों को व्यापक स्वीकृति देकर के, एडल्ट्री के कानून को हटाकर के वे समस्त हदें पार कर ली गई हैं जिनसे समाज में अनैतिक, अप्राकृतिक, अमर्यादित जीवन पद्धति को प्रवेश मिल चुका है। कम से कम विवाह के पवित्र बन्धन को कलंकित करने का प्रयास माननीय उच्चतम न्यायालय को नहीं करना चाहिए। प्रकृति पर जब विश्लेषणात्मक दृष्टि डालते हैं तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि सन्तानोत्पत्ति सृष्टि की निरन्तरता को बनाए रखने के लिए एक प्राकृतिक नियम है और इस नियम में भी एक अटल नियम यह है कि सन्तानोत्पत्ति के लिए नर और मादा यह दोनों आवश्यक हैं। जितनी भी जाति प्रजाति संसार में हैं उनमें आपको नर और मादा यह दो जेंडर मिलेंगे। इनसे ही सन्तानोत्पत्ति होती है, जो उस प्रजाति को निरन्तरता प्रदान करती है, उसका अस्तित्व बनाए रखती है।

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। वैदिक आज्ञाओं की अनुपालन में भी और समाज में संभाव्य नैतिकता के सम्प्रेषण हेतु भी विवाह नामक संस्था का गठन किया गया।

भारत में ही क्यों संसार में जितनी भी विवाह पद्धतियाँ हैं सभी में विवाह स्त्री और पुरुषों के मध्य स्वीकार किया गया है। कहीं भी स्त्री-स्त्री का और पुरुष-पुरुष का सम्बन्ध विवाह के तौर पर स्वीकार नहीं किया गया है, क्योंकि यह अप्राकृतिक है। विवाह का जो उद्देश्य है अर्थात् सन्तानोत्पत्ति, वह इस विषमलिंगी सम्बन्ध में ही प्राप्य है। ठीक है कि विवाह समाज में काम सम्बन्धों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से और काम के शुभ सम्पादन के उद्देश्य से तो है परन्तु उसका अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति और सन्तान निर्माण है।

जितने भी मत-मतान्तर हैं आप सभी में यही पाएँगे। और यही क्यों भारत में जो स्पेशल मैरिज एक्ट बनाया गया है, जो कि सभी पर्सनल कानूनों से अलग है, उसमें भी विवाह को स्त्री और पुरुष के मध्य माना गया है और तकनीकी रूप से देखा जाए तो ये जो याचिकाऐं सुप्रीम कोर्ट के समक्ष हैं उनमें यही तो माँग की गई है कि स्पेशल मैरिज एक्ट में संशोधन करके इस स्त्री और पुरुष को समाप्त किया जाए और इनके स्थान पर जीवन साथी या ऐसा कुछ रखा जाय। इनकी मंशा है किन्ही भी दो वयस्कों के बीच में सम्बन्ध को विवाह की मान्यता दी जाए। चाहे उनका जेंडर समान ही क्यों न हो।

अगर हम यह समझना चाहें कि ऐसे अप्राकृतिक काम सम्बन्धों में गुंथे लोग साथ-साथ तो रह ही रहे हैं, अब वह सब कुछ अपराध भी नहीं है तो विवाह की जिद क्यों? तो जो उत्तर मिलता है वह यह है कि बीमा विभाग में, सरकारी विभागों में पत्नी को तो नामित किया जाता है परन्तु ऐसे सम्बन्धों में जो पार्टनर हैं उसे नामित

करने का कोई प्रावधान नहीं है। तो भाई केवल इसके लिए विवाह की आवश्यकता क्यों समझी जा रही है, उस पवित्र बन्धन को क्यों प्रदूषित करने का प्रयास किया जा रहा है? इसके बजाय क्या यह सम्भव नहीं है कि बीमा नियमों में, सरकारी नियमों में उपयुक्त संशोधन हो जाए? हमारे विचार में यह कोई बड़ी बात नहीं है। परन्तु नहीं इनको नाम विवाह का चाहिए।

हम यह रेखांकित करना चाहेंगे कि विवाह स्त्री-पुरुष के मध्य ही होता है क्योंकि सन्तानोत्पत्ति स्त्री-पुरुष के मध्य सम्भव है और सन्तानोत्पत्ति ही विवाह का मुख्य उद्देश्य है। सन्तान का निर्माण भी माता और पिता दोनों का ही कार्य है। प्रथम जिम्मेदारी माँ की है फिर पिता की।

समलैंगिकों में सन्तान का निर्माण केवल और केवल दत्तक सन्तान का ही किया जा सकता है। सबसे पहली समस्या यह आएगी कि समलैंगिक जोड़ों को दत्तक पुत्र या पुत्री देगा कौन? कारण कि हर व्यक्ति को यह ज्ञात होगा कि ऐसे जोड़ों के मध्य सन्तान का निर्माण सामान्य तौर पर हो ही नहीं सकता। अनेक प्रकार की मनोवैज्ञानिक, सामाजिक उलझनें उस नन्हे बच्चे के समक्ष आती रहेंगी। ऐसे में उसके व्यक्तित्व का सन्तुलित उन्नयन किस प्रकार हो सकेगा, यह एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न है। फिर समलैंगिकों में कौन माँ होगी और कौन पिता इसका निर्धारण किस प्रकार होगा? और क्या जो एक बार माँ बनी वह हमेशा माँ रहेगी ऐसा किस प्रकार निश्चित हो सकेगा? मान लीजिए समलैंगिक साथियों में से एक का मन अभी माँ बनने का है और उनमें समझौता हो जाता है कि 'एक्स' माँ है और 'वाई' पिता। कुछ समय बाद यह समझौता बदल जाता है तो माता-पिता बदल जाएँगे? क्या ही हास्यास्पद स्थिति समाज की ये करना चाहते हैं। मान लीजिए न्यायालय समलैंगिकों के विवाह के पक्ष में निर्णय देता है, जैसा कि मुख्य न्यायाधीश के व्यवहार से लग रहा है तो क्या समाज इसको आसानी से स्वीकार करेगा। इस बात पर हम पुनः जोर देना चाहते हैं कि यह लोग सन्तान अडॉप्ट कहाँ से करेंगे? केवल अनाथालय वह जगह है जहाँ से यह बच्चे ले सकते हैं क्योंकि सामान्य स्थितियों में कोई माता-पिता ऐसे समलैंगिक जोड़ों को अपनी सन्तान कभी नहीं देना चाहेगा क्योंकि इस परिवेश में उस सन्तान का मनोवैज्ञानिक विकास कैसा होगा इसका अनुमान लगाया जा सकता है। निश्चित रूप से ऐसे दत्तक बच्चे सामान्य बालक-बालिका के रूप में न बड़े हो सकेंगे और न ही अपने आसपास के बच्चों में उनकी सहज स्वीकार्यता होगी। एक उदाहरण से समझिए। मनोज नाम का एक बच्चा है उसके माता-पिता दोनों ही महिला हैं जिन्होंने विवाह कर लिया है। (अगर ऐसे विवाह की अनुमति हो जाए तो)। यह लोग परिवार में कोई आयोजन

इसलिए नहीं करते कि आने वाले अभ्यागत इनके बारे में तरह-तरह की बात करेंगे। एक बार मनोज ने अत्यन्त आग्रह किया कि सब बच्चों के जन्मदिन मनाए जाते हैं मेरा भी मनाया जाए। अन्ततोगत्वा उन्होंने स्वीकृति दे दी और घर पर मेहमानों को बुलाया। मनोज के मित्र और उनके माता-पिता इत्यादि आए। इन दोनों समलैंगिकों में से एक ने जींस कमीज जैसे कपड़े पहन रखे थे दूसरी ने साड़ी। मनोज ने इनका परिचय कराते हुए कहा कि ये मेरे पिता हैं (जींस वाले) और यह मेरी माता हैं (साड़ी वाली)। सभी आगन्तुक जिस प्रकार की प्रतिक्रिया देने लगे वह मनोज के लिए शर्म का कारण बन गई। विचार करें वह अपमान और ग्लानि और वह भी कदम-कदम पर लेके आगे की जिन्दगी के सफर पर बड़ा कैसे होगा? क्या समलैंगिकों को विवाह का अधिकार देकर के न्यायालय ऐसा वातावरण 'क्रिएट' करना चाहता है? बच्चों को

इस प्रकार की मानसिक समस्याएँ अल्पायु में 'गिफ्ट' करना चाहता है? वस्तुतः पाश्चात्य अभिजात्य मानसिकता में डूबे हुए लोग भारतीय संस्कृति और सभ्यता से दूर खड़े हुए हैं। उसके वैभव का, उसके अन्दर निहित निर्माण की शक्ति को, सन्तान के संतुलित विकास की शक्ति को वे नहीं जानते। उन्होंने जिस वातावरण में आँखें खोली हैं वहाँ केवल स्वच्छन्दता देखी है और संविधान के हर प्रावधान भी उन्हें स्वच्छन्दता की वकालत करते दिखाई देते हैं, परन्तु समझना चाहिए कि समाज का क्या दृष्टिकोण है भारत की संस्कृति क्या कहती है? जिस देश में हम रहते हैं उस देश के ऋषि-मुनियों और ज्ञान परम्परा ने हमें क्या सिखाया है? अगर आप अपने निर्णय में इस समझ को साथ नहीं रखेंगे तो जान लीजिए आप न्याय नहीं कर रहे हैं। निजता के अधिकार का यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि आप विवाह जैसी संस्था को नष्ट-भ्रष्ट कर दें, जो कि एक स्वस्थ परिवार, एक श्रेष्ठ गृहस्थाश्रम, एक स्वस्थ जीवन पद्धति का आधार होती है।

हम यहाँ केवल कतिपय वेदमंत्रों को प्रस्तुत करेंगे जो कि स्त्री-पुरुषों के बारे में और क्यों उन दोनों की सहभागिता स्वस्थ सन्तान के निर्माण में आवश्यक है और क्यों उन दोनों के मध्य अटूट सम्बन्ध विधाता ने बनाया है यह दिखाने का प्रयत्न करेंगे।

सबसे प्रथम हम यह देखें कि वेद में सैकड़ों ऐसे मंत्र हैं जिनमें विवाह केवल स्त्री-पुरुषों के मध्य होता है, ये निर्देश प्राप्त हैं। यजुर्वेद के आठवें अध्याय का नवां मन्त्र निम्न प्रकार है-

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम तऽइन्दोरिन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रहाँ ऋध्यासम्।
अहं परस्तादहमवस्ताद्यदन्तरिक्षं तदु मे पिताभूत्। अहꣳसूर्यमुभयतो ददर्शाहं देवानां परमं गुहा यत्॥

स्त्री और पुरुष विवाह से पूर्व परस्पर अच्छी प्रकार परीक्षा करके, समान गुण, कर्म, स्वभाव, रूप, बल, स्वास्थ्य, पुरुषार्थ, विद्या वाले दोनों स्वयंवर-विधि से विवाह करके इस प्रकार का प्रयत्न करें, जिससे वे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की उन्नति कर सकें। जिनके माता-पिता विद्वान् न हों, उनके सन्तान भी उत्तम नहीं हो सकते, इसलिये पूर्ण विद्या और सुशिक्षा से युक्त हो के ही स्त्री-पुरुष गृहाश्रम का आरम्भ करें।

यजुर्वेद के निम्न मंत्र में स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध के बारे में जो बताया है वह विस्मृत करने वाला है। चिन्तन करेंगे तो पाएँगे कि स्त्री, पुरुष है तो है, और पुरुष, स्त्री है तो है। ये एक दूसरे से अलग हो ही नहीं सकते। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं।

गायत्रं छन्दोऽसि त्रैष्टुभं छन्दोऽसि द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिगृह्णाम्यन्तरिक्षेणोप यच्छामि।
इन्द्राश्विना मधुनः सारघस्य घर्मं पात वसवो यजत वाट्। स्वाहा सूर्यस्य रश्मये वृष्टिवनये॥

यथा शब्दानामर्थैः सह वाच्य वाचक सम्बन्धः सूर्येण सह पृथिव्या रश्मिभिस्सह वृष्टेर्यज्ञेन सह यजमानस्यर्त्विजा चास्ति, तथैव विवाहितयोः स्त्रीपुरुषयोः सम्बन्धो भवतु। जैसे शब्दों का अर्थों के साथ वाच्यवाचक सम्बन्ध, सूर्य के साथ पृथिवी का, किरणों के साथ वर्षा का, यज्ञ के साथ यजमान और ऋत्विजों का सम्बन्ध है, वैसे ही विवाहित स्त्री-पुरुषों का सम्बन्ध होवे। - यजुर्वेद भाष्य ३८/६

पुरुषो यस्याः स्त्रियः पतिर्यस्य या स्त्री पत्नी भवेत् स सा च परस्परस्यानिष्टं कदापि न कुर्य्यात्।
एवं सुखसन्तानैरलंकृतौ भूत्वा धर्मेण गृहकृत्यानि कुर्य्याताम्।

जिस पुरुष की जो स्त्री वा जिस स्त्री का जो पुरुष हो, वे आपस में किसी का अनिष्ट-चिन्तन कदापि न करें। ऐसे ही सुख और सन्तानों से शोभायमान हो के धर्म से घर के कार्य्य करें। - यजुर्वेद भाष्य ११/५२

समलैंगिकों के मध्य के सम्बन्ध को वेद से लेकर के अध्यतन किसी तत्ववेत्ता ने स्वीकार नहीं किया। कारण काम सम्बन्धों को लेकर के समलैंगिक प्रवृत्ति नियम नहीं अपवाद है, इसका सामान्यीकरण मूर्खता और विनाश

होगा।

पुनः कह दें कि प्राकृतिक रूप से यह समलैंगिक प्रवृत्ति बहुत कम स्त्री पुरुषों में होती है परन्तु आज जिस प्रकार इण्टरनेट के माध्यम से अश्लील सामग्री किशोरों को उपलब्ध है और वे उस से प्रेरित होकर, provoke होकर उपलब्धता के आधार पर अपनी मित्रों अथवा अपने मित्रों के साथ इस प्रकार के सम्बन्धों का निर्माण कर लेते हैं जो अनेक बार पुनरावृत्ति के पश्चात् उन्हें अपनी एकमात्र अभिरुचि और स्वाभाविक काम प्रवृत्ति प्रतीत होती है। जबकि यह भ्रम होता है। इस प्रकार से समलैंगिकों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस पर समाज शास्त्रियों को अवश्य विचार करना चाहिए।

अगर आप शास्त्रों का अनुकरण करने से बचना चाहते हैं तो कम से कम उन २१ अवकाश प्राप्त हाईकोर्ट न्यायाधीशों की तो सुन लीजिए जिन्होंने एक माह पूर्व समलैंगिक विवाह के बारे में एक खुला पत्र लिखा था।

Legalization of same-sex marriage would have a "devastating impact on children, family and society".

The judges said allowing same-sex marriage could increase the incidence of HIV in India and expressed concern that it could "negatively affect the psychological and emotional development of children raised by same-sex couples".

इस प्रकार केन्द्र सरकार, देश के सेवानिवृत्त जज, बुद्धिजीवी और पूर्व अधिकारियों का एक बड़ा वर्ग समलैंगिक विवाह को मान्यता देने का कड़ा विरोध कर रहा है। सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि क्या भारतीय समाज समलैंगिक शादियों को स्वीकार करेगा। सुनवाई के दौरान यह सवाल भी उठा कि ऐसी शादियों में पति कौन होगा? सम्बन्ध टूटते हैं तो जीवन साथी को भरण-पोषण भत्ता कौन देगा? ढ़ेर सारे सवालों के बीच यह मामला बहुत जटिल हो चुका है।

केन्द्र सरकार ने साफ कर दिया है कि समलैंगिक शादियों को कानूनी मान्यता देना एक विधायी कार्य है, जिस पर अदालतों को फैसला करने से बचना चाहिए।

इस तरह के संवेदनशील मामले में सुप्रीम कोर्ट का कोई भी निर्णय आगे की पीढ़ियों के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है। न्यायपालिका को देश के लोगों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए और इस मुद्दे को संसद पर ही छोड़ देना चाहिए। यह एक ऐसा मुद्दा है जिससे समाज की भौतिक संरचना, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाओं पर प्रभाव पड़ना तय है। ऐसे में इसका हल विधायी प्रक्रिया से ही निकलना चाहिए। समलैंगिकता भारतीय संस्कृति पर आक्रमण होगा। हमारे शास्त्रों में इसे अपराध माना गया है। समलैंगिक विवाह प्रकृति से सुसंगत एवं नैसर्गिक नहीं है। इसलिए इस विषय को सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर ही सम्भालने की जरूरत है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

आजीवन सत्यार्थमित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बंधु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

पुनर्नवीनीकरण के झंझट से मुक्ति

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर माननीय सरसंघचालक का वक्तव्य

चैत्र कृष्णा ५-७ युगाब्द ५१२४ (१२-१४ मार्च २०२३)

पराधीनता के काल में जब देश अपने सांस्कृतिक व आध्यात्मिक आधार के सम्बन्ध में दिग्भ्रमित हो रहा था, तब महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्राकट्य हुआ। उस काल में उन्होंने राष्ट्र के आध्यात्मिक अधिष्ठान को सुदृढ़ करने हेतु 'वेदों की ओर लौटने' का उद्घोष कर समाज को अपनी जड़ों के साथ पुनः जोड़ने का अद्भुत कार्य किया। समाज को बल व चेतना प्रदान करने तथा समय के प्रवाह में आई कुरीतियों को दूर करने वाले महापुरुषों की शृंखला में महर्षि दयानन्द सरस्वती देदीप्यमान नक्षत्र हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रादुर्भाव व उनकी प्रेरणाओं से हुई सांस्कृतिक क्रान्ति का स्पंदन आज भी अनुभव किया जा रहा है।

सत्यार्थप्रकाश में स्वराज को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा कि स्वदेशी स्वभाषा, स्वबोध के बिना स्वराज नहीं हो सकता। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द की प्रेरणा और आर्यसमाज की सहभागिता अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अनेक स्वनामधन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने इनसे प्रेरणा ली। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के संकल्प के साथ प्रारम्भ किये गए आर्यसमाज के माध्यम से भारत को सही अर्थों में आर्य व्रत (श्रेष्ठ भारत) बनाना उनका प्रथम लक्ष्य था।

उन्होंने नारी को अग्रणी स्थान दिलाने के लिए युगानुकूल व्यवस्थाएँ बनाकर कन्या पाठशाला और कन्या गुरुकुल के माध्यम से उनको न केवल वेदों का अध्ययन करवाया अपितु नारी शिक्षा का प्रसार भी किया। आदर्श जीवनशैली अपनाने के लिए उन्होंने आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) पर न केवल आग्रह किया, अपितु उनके लिए व्यवस्था भी निर्माण की। उन्होंने देश की युवा पीढ़ी में तेजस्विता, चरित्र निर्माण, व्यसनमुक्ति, राष्ट्रभक्ति के संचार, समाज व देश के प्रति समर्पण निर्माण करने के लिए गुरुकुल व डीएवी विद्यालयों का प्रसार कर एक क्रान्ति की थी। गौ रक्षा, गोपालन, गौ आधारित कृषि, गौ संवर्धन के प्रति उनका आग्रह आज भी आर्यसमाज के कार्यों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ कर धर्मप्रसार का एक नया आयाम खोला, जो आज भी अनुकरणीय है। महर्षि दयानन्द का जीवन उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का साकार स्वरूप था। सादगी, परिश्रम, त्याग, समर्पण, निर्भयता एवं सिद्धान्तों के प्रति अडिगता उनके जीवन के प्रत्येक क्षण में परिलक्षित होती है।

महर्षि दयानन्द के उपदेशों और कार्यों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। उनकी द्विशताब्दी के पावन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उन्हें श्रद्धापूर्वक वन्दन करता है। सभी स्वयंसेवक इस पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में पूर्णमनोयोग से भाग लेकर उनके आदर्शों को अपने जीवन में चरितार्थ करें। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की मान्यता है कि अस्पृश्यता, व्यसन और अंधविश्वासों से मुक्त करके एवं 'स्व' से ओत-प्रोत संस्कारयुक्त ओजस्वी समाज का निर्माण करके ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा
सेवा साधना एवं ग्राम विकास केन्द्र
पट्टीकल्याणा- पानीपत (हरि.), (Social Media) से प्राप्त

राष्ट्रीय एकता और मत मतान्तर

कतिपय बुद्धिजीवियों का आरोप है कि स्वामी दयानन्द द्वारा नानक पन्थ की आलोचना किए जाने से पंजाब में हिन्दू-सिख एकता में दरार पैदा हुई। इस प्रकार के आरोपकर्त्ता स्वयं में साम्प्रदायिक सोच के व्यक्ति हैं। क्योंकि स्वामी जी ने नानक पन्थ से कहीं अधिक कड़ी भाषा में विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों की खबर ली है। अतः स्वामी जी की सोच में न तो साम्प्रदायिकता है और न ही एकता को भंग करने की (मंशा) आकांक्षा। वे तो भारतीय और अभारतीय दोनों प्रकार के सम्प्रदायों के अन्धविश्वासों, रूढ़ियों तथा पाखण्डों का खण्डन करके बौद्धिक तर्कयुक्त वैज्ञानिक विचार की प्रतिष्ठा चाहते हैं। कबीर, दादू, नानक आदि मध्यकालीन सन्तों ने अपने अपने समय में हिन्दू धर्म के पाखण्डों का तीव्र खण्डन किया है। इस प्रकार के समाज सुधारक सन्तों का अभिप्राय मानव समुदाय को गलत रास्तों से हटाकर प्रशस्त पथ पर चलने की प्रेरणा देना रहा है। स्वामी जी का स्थान मध्यकालीन सन्तों तथा दार्शनिक विचारकों से तनिक भी कम नहीं है। अतः उन पर किसी 'सम्प्रदाय विशेष' का विरोधी होने का आरोप स्वयं में एक निन्दनीय प्रयास है। इस संदर्भ में 'कौंसिल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च' के भूतपूर्व महानिदेशक भारतीय विज्ञान संवर्द्धन संस्था के अध्यक्ष, देश के गणमान्य वैज्ञानिक स्वर्गीय डॉ. आत्माराम द्वारा स्वामी जी के खण्डन-मण्डन परक व्यक्तित्व तथा कार्य का मूल्यांकन उल्लेखनीय है- 'समय की पुकार है कि समाज में बड़ी गहराई तक व्याप्त अन्धविश्वासों को जड़ से उखाड़ फेंका जाए और स्वामी जी का अन्धविश्वास को दूर करने का सन्देश घर-घर पहुँचाया जाए। उनकी एक यही उपलब्धि आइन्सटाईन, गैलीलियो, न्यूटन की उपलब्धियों से किसी भी तरह कम नहीं। इसमें वैज्ञानिक तत्त्व है जो सार्वभौम है। स्वामी जी को एक धार्मिक पथदृष्टा व समाज प्रवर्तक ही समझा जाता है। किन्तु उनका दृष्टिकोण और विचारधारा मूलतः वैज्ञानिक तर्कों पर आधारित थी। मेरे विचार से वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने विज्ञान के आधार पर अन्धविश्वासों पर प्रहार किया और उन्हें दूर करने में बहुत कुछ सफल भी हुए। अन्धविश्वास का अन्धेरा छांटने के लिए स्वामी जी ने बार-बार उन पर प्रकाश डाला है। उन्होंने सभी धर्मों के पाखण्डों पर, पोप-लीलाओं पर जमकर चोट की है। एक सच्चे वैज्ञानिक की तरह स्वामी जी ने अपने-पराये का भेद किए बिना तमाम धार्मिक विश्वासों पर जमी हुई काई हटाने का पूरा प्रयास किया। भले ही किसी विज्ञानशाला में वे पढ़े न हों, भले ही किसी वैज्ञानिक

से दीक्षा न ली हो, भले ही किसी प्रयोगशाला में रिसर्च न की हो, मेरे विचार से स्वामी जी गैलीलियो की अपेक्षा कहीं ऊँचे स्तर के वैज्ञानिक थे। गैलीलियो में वह निर्भीकता नहीं थी, स्वामी जी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कूट-कूट कर भरा हुआ था।'

अनैतिकता और अन्धविश्वासों के साथ समझौता नहीं करने वाले स्वामी दयानन्द इस युग के एकमात्र प्रवर्तक थे, जिन्होंने कहा कि हम सब आपस में बैर भाव को त्यागकर, सत्य वैदिक आस्थाओं को स्वीकार कर सत्य का ग्रहण और असत्य का प्रतिवाद करें। अनैतिकता और अन्धविश्वासों को मत-मतान्तरों से निकाल दें, तो सभी मनुष्य एक सार्वभौम मंच पर

मानवमात्र की सेवा कर सकते हैं।

बींसवीं शती में मनुष्यमात्र का एक गणित है, सबका एक रसायनशास्त्र है, एक प्राणिशास्त्र है, एक भौतिकी और एक शिल्प है। इसी प्रकार वेद और वेदांग के अति प्राचीन युग में ज्ञान-विज्ञान मानवमात्र का एक था। हिन्दू गणित, अरब ज्योतिष, यूनानी तर्कशास्त्र और चीनी या मिश्री तत्त्वज्ञान ऐसे शब्द मध्ययुग में प्रचलित हुए। तब प्राचीन ऋषियों की परम्परा में विश्व के सभी विद्वान् और तत्त्वज्ञानी सत्य और ज्ञान को समझने में संकीर्णताओं को छोड़कर सत्य धर्म के सिद्धान्तों में एक हो जायें।

भारत में अन्धविश्वासों के पोषण और समर्थन का काम हिन्दू धर्म के ठेकेदार कर रहे हैं। अन्य देशों में ईसाई और मुसलमान भी इन्हीं अन्धविश्वासों का पोषण और समर्थन कर रहे हैं। आर्य समाज, महर्षि दयानन्द और आर्षकालीन प्राचीन परम्पराएँ इन मान्यताओं का न तो पोषण करती थीं, न समर्थन। हम तुम्हारे और तुम हमारे असत्यों, अन्धविश्वासों और अनैतिकताओं का विरोध न करो इस प्रकार के समन्वय की बात करना पतनोन्मुख होना है। आर्य समाज का दृढ़ संकल्प है कि किसी भी स्थिति, देशकाल या अवस्था में किसी के अन्धविश्वास, असत्य और अनैतिकता के साथ वह साझा नहीं हो सकते हैं मन्दिर, मस्जिद, गिरजें, कबरें, अवतार, पैगम्बर मूर्ति और छल-कपट पूर्ण चमत्कारों पर एकता नहीं हो सकती। अपने देश में हिन्दुओं को इस बात पर पूरी तरह विचार करने की आवश्यकता है। आर्य समाज भारतवर्ष में अपने को किसी भी राष्ट्रीय अंग से पृथक् नहीं करना चाहता। वह सबका हितैषी है, चाहे वह किसी प्रदेश का क्यों न हो। किन्तु अन्धविश्वासों और रूढ़ियों को तोड़े बिना, परम्परा से चली आ रही रस्मों-रिवाजों और आस्थाओं को शुद्ध और पवित्र किए बिना हम अपने राष्ट्र का संगठन नहीं कर सकते। अनैतिक और अन्धविश्वासी तत्त्वों के साथ समझौता करने से राष्ट्रीय एकता सम्भव नहीं है।

पिछले १००० वर्ष से भारत में भारतीयों के बीच मुसलमानों का कार्य आरम्भ हुआ। सन् ६०० ई. से लेकर १६०० के बीच में दस करोड़ भारतीय मुसलमान बन गए। अर्थात् १०० वर्ष में एक करोड़ व्यक्ति मुसलमान बनते गए और प्रतिवर्ष एक लाख भारतीय मुसलमान बन रहे थे। पिछले दो सौ वर्षों में भारत में ब्रिटिश राज्य का आधिपत्य होने पर इसी गति से भारतीय हिन्दू ईसाई भी बनने लगे। इस धर्म परिवर्तन का आभास न किसी हिन्दू राजा को हुआ, न किसी धार्मिक हिन्दू नेता को। भारतीय जनता ने अपने समाज के संगठन की समस्या पर इस दृष्टि से कभी सूक्ष्मता से विचार नहीं किया था। पण्डितों,

विद्वानों, मन्दिर के पुजारियों के सामने यह समस्या राष्ट्रीय दृष्टि से प्रस्तुत ही नहीं हुई।

पिछले १००० वर्ष के इतिहास में स्वामी दयानन्द अकेले ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने इस समस्या पर विचार किया। उन्होंने दो समाधान बताए- पहला भारतीय समाज सामाजिक कुरीतियों से आक्रान्त हो गया है और दूसरा समाज का फिर से परिशोधन आवश्यक है। भारतीय सम्प्रदायों के कतिपय कलंक हैं, जिन्हें दूर न किया गया, तो यहाँ की जनता मुसलमान बनती ही रही है, आगे तेजी से ईसाई भी बनेगी। हमारे समाज के कतिपय भयंकर कलंक ये थे-

१. मूर्ति पूजा और अवतारवाद।

२. जन्मना जातिवाद।

३. अस्पृश्यता या छुआ-छूतवाद।

४. परम स्वार्थी व भोगी महन्तों, पुजारियों, शंकराचार्यों की गद्दियों का जनता पर आतंक।

५. जन्मपत्रियों, फलित ज्योतिष, अन्धविश्वासों, तीर्थों और पाखण्डों का भोली-भाली ही नहीं शिक्षित जनता पर भी कुप्रभाव।

राष्ट्र से इन कलंकों को दूर न किया जायेगा, तो विदेशी सम्प्रदायों का आतंक इस देश पर रहेगा ही।

दूसरा समाधान स्वामी दयानन्द ने यह प्रस्तुत किया कि जो भारतीय जनता मुसलमान या ईसाई हो गई है उसे शुद्ध करके वैदिक आर्य बनाओ। न केवल इतना ही, बल्कि मानवता की दृष्टि से अन्य देशों के ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैनी सबसे कहो कि असत्य और अज्ञान का परित्याग करके विद्या और सत्य को अपनाओ और विश्वबन्धुत्व की संस्थापना करो।

लेखक- डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
अग्निर्ज्योतिः
चाणक्यपुरी, अमेठी- २२७४०५ (उत्तरप्रदेश)

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

आमतौर पर समस्याएँ दुःख का स्रोत समझी जाती हैं। कोई भी समस्यापूर्ण जीवन नहीं बिताना चाहता। सभी चाहते हैं कि जीवन समस्याओं से, चिन्ताओं से मुक्त हो। समस्याओं का अभाव उन्हें सुख प्रतीत होता है और समस्याओं का सामना दुःख। यह क्या सचमुच ऐसा है? समस्याहीन जीवन क्या एकरसता का पर्याय नहीं बन जाता। समस्याएँ ही हैं जो जीवन में रस घोलती हैं, उसे विविध और चुनौती भरा बनाती हैं। चुनौतीहीन, समस्याहीन जीवन निष्क्रिय हो जाता है।

समस्याएँ यदि चुनौती बना ली जाएँ तो फिर उनसे जूझने में अपनी सुप्त शक्तियों का अहसास होने लगता है और अहसास के साथ आस्था का सम्मिश्रण हो जाए तो समस्या न केवल तिरोहित हो जाती है, वह एक नयी ऊर्जा, नये विश्वास से भर जाता है।

इस विषय में विशेष अध्ययन के लिए पाठकों को हमारी पुस्तक सफलता का पथ पढ़नी चाहिए। फिलहाल आपके सुखी और प्रसन्न जीवन के लिए दस सूत्र लिखे जा रहे हैं-

प्रतिदिन की अच्छी बातें नोट करें

हर व्यक्ति के साथ अकसर ऐसा वाक्या हो जाता है जिसे वह अपनी व्यक्तिगत डायरी में लिख सके। वक्त आने पर उन बातों को याद करके व्यक्ति अपने होठों को मुस्कराहट दे सकता है। कोई कठिनाई आने पर उससे घबराएँ नहीं, बल्कि उसे हल करने की पहल करें। उदाहरण के रूप में जो लोग यह महसूस करते हैं कि उन्होंने खुद पर काबू पा लिया है वे ज्यादा खुश रहते हैं, वनस्पत उनके, जो यह समझते हैं कि खुद पर काबू पाना उनके बूते के बाहर की चीज है। अतः रोजाना की अच्छी बातों को नोट करें, खाली समय में इन्हीं बातों से दिल बहलाएँ।

हँसिए और हसाँइये

मनोवैज्ञानिकों की राय है कि जो लोग हताश व निराश रहते हैं वे अपनी जिम्मेदारियों को ठीक ढंग से नहीं निभा पाते हैं। वहीं हँसते रहने वाले लोगों में इम्यून सिस्टम (प्रतिरोधी क्षमता) की ताकत ज्यादा होती है, इसी कारण दर्द में राहत मिलती है अतः हँसने वाले लोग प्रायः कम बीमार पड़ते हैं।

दोस्ती यारी बढ़ाएँ

एक अध्ययन के अनुसार जल्दी-जल्दी घुलने मिलने वाले लोग खुशदिल व सुखी रहते हैं क्योंकि उनके परिचय का दायरा बहुत बड़ा रहता है जिसके कारण वे अपना दुःख दर्द दोस्तों में बाँट लेते हैं। जबकि अपने दायरे में रहने वाले बहुत कुंठित व हीन भावना से ग्रस्त होते हैं। एक अध्ययन के अनुसार जिनके दोस्त ज्यादा होते हैं वे लम्बी आयु जीते हैं और

घुट-घुट कर जीने वाले लोगों की उम्र १० वर्ष कम हो जाती है। दोस्ती यारी बढ़ाने का मकसद यह नहीं है कि फालतू व आलसी दोस्तों को भी अपने साथ शामिल करें।

खुद को भी महत्व दें

व्यक्ति को अगर उन्नति करनी है तो स्वयं को महत्त्व दें। स्वयं की शख्सियत को पहचानें न कि दूसरों के जैसे बनने की कोशिश करें। इससे व्यक्ति निराशा के भंवर में फंस जाता है। यदि कल्पना छोड़ हकीकत में जीवन निर्वाह करेंगे तो जीने का मजा कुछ अलग ही आयेगा।

पैसे को अनावश्यक महत्व न दें

अगर आप यह सोचते हैं कि पैसे से हर खुशी खरीद सकते हैं तो आप गलत हैं। एक सर्वेक्षण के मुताबिक १९६७ की तुलना में आज अमेरिकी नागरिकों की आय दस गुना हो गई है। फिर भी वे १९६७ की तुलना में न ज्यादा खुश हैं न सन्तुष्ट। कहने का तात्पर्य यही है कि रुपयों से खुशी नहीं खरीदी जा सकती।

एक अध्ययन के अनुसार जो नौकरीपेशा लोग ओवरटाइम करते हैं वे उनसे ज्यादा खुश नहीं जो ओवरटाइम करते हैं।

हर काम मन लगाकर करें

कोई भी काम करने से पूर्व उस कार्य को करने हेतु पूरा मन बना लें। मन को प्रसन्न रखने के लिए सुबह-शाम घूमें व हरी घास पर चलें।

सन्तुष्ट तथा खुश रहें

यह एक आम धारणा है कि ज्यादा पैसा, रिश्ते, व्यवसाय, कैरियर आदि जीवन में खुशियाँ भर देंगे, लेकिन यह एक गलतफहमी से ज्यादा कुछ नहीं है। आपको चाहिए कि ऐसी बातों का संग्रह रखें जो आपको सचमुच संतोष दें। किसी भी बड़े फैसले या बड़ी समस्या के वक्त यही संग्रह आपकी बहुत मदद करेगा। थोड़े फायदे के लिए खुशियों का गला न घोटें। खुशी हर पल, खुशी हरदम यही आपका मकसद होना चाहिए।

टीवी प्रोग्राम देखें, दूर दृष्टि से

केवल वक्त काटने के लिए टीवी देखने की आदत उचित नहीं? टीवी के ज्यादातर प्रोग्राम मारधाड़, सैक्स, अपराध, फूहड़ सत्य से भरे पड़े हैं। अतः टीवी पर चयन करके शिक्षाप्रद व ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम ही देखें, इससे आपके ज्ञान का विकास होगा। एक अध्ययन के दौरान एक सर्वे किया गया कि जो धार्मिक क्रियाकलापों, पूजा-पाठ, जप-तप आदि में रुचि लेते थे। वे लोग जीवन के प्रति ज्यादा आशान्वित और खुश नजर आए। आशावादी नजरिया रखने वाले ही कामयाबी की मंजिल तक पहुँचते हैं।

स्नेह व आत्मीयता अपनाएँ

प्यार व आत्मीयता खुशियों की जड़ हैं। भावनात्मक लगाव व स्नेह जितना आप लोगों में बाँटेंगे उतना ही खुद को ज्यादा तनाव से मुक्त रखेंगे। अभी तक ऐसी दवा नहीं बनी जो प्यार से ज्यादा प्रभावशाली हो।

स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें

नींद पूरी न होने पर मन खिन्न हो जाता है, अतः नींद पूरी लें। साथ ही डायटिंग के चक्कर में खाली पेट न रहें। रोजाना आठ-दस गिलास पानी पीएँ। ऐसा भी न करें कि जरूरत से ज्यादा चीजों का सेवन करें।

- आचार्य अशोक सहजानन्द
बी-५/२६३ यमुना विहार, दिल्ली-११००५३
चलभाष- ८०१०३३९९१०

महर्षि दयानन्द का भक्तिवाद

सामान्यतः यह धारणा है कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में शुष्क तर्क अधिक है। वहाँ भक्ति का अभाव है। पर वास्तविकता यह है कि भक्ति और ईश्वरोपासना से सम्बन्धित अनेक विशद् विचार स्वामी जी के ऋग्वेदभाष्य, यजुर्वेदभाष्य, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, पंचमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, सत्यार्थ प्रकाश आदि सभी ग्रन्थों में यत्र-तत्र पाये जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने भक्ति रूपी अमृत के पिपासुओं को तृप्त करने के लिए एक विशिष्ट ग्रन्थ 'आर्याभिविनयः' लिखा है, जिसमें एक सच्चे ईश्वर भक्त, योगी, ईश्वर-साक्षात्कर्त्ता और परमेश्वर के परम उपासक-साधक की वाणी से निसृत उद्गार पाये जाते हैं। आर्यों के इस विशेष (अभि) विनय-संग्रह में महर्षि दयानन्द जी द्वारा १०८ वेदमन्त्रों की भावभीनी भक्तिपरक व्याख्या की गई है। वस्तुतः दयानन्द वांग्मय में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, भक्ति-संन्ध्या से सम्बन्धित पृष्ठों की संख्या सैंकडों में नहीं, सहस्त्रों में है। स्वामी जी के ग्रन्थों में उनका प्रिय विषय 'ईश्वर का स्वरूप और उसकी उपासना' बारम्बार निरूपित है, जिसमें से डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी के अनुसार महर्षि दयानन्द जी के भक्तिवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ प्रकट होती हैं-

१. स्वामी जी ईश्वर के गुण, क्रिया, सामर्थ्य, स्वभाव और वैशिष्ट्यादि का वर्णन करते समय प्रेम-भक्ति और उपासना के सागर में निमग्न हो जाते हैं। ईश्वर के लिए जितने अधिक विशेषणों का प्रयोग उन्होंने किया, उतने नामों का प्रयोग हिन्दी साहित्य के स्वर्ण काल 'भक्तिकाल' के किसी निर्गुण या सगुणमार्गी सन्त ने भी नहीं किया है। 'आर्याभिविनयः' के प्रथम विनय में ही ६० विशेषण प्रभु के बतलाये गये हैं।

२. दयानन्दीय भक्तिवाद में अधमोद्धारक परमकृपालु भगवान् के प्रति दैन्य निवेदन, शरणागति, अपना अकिंचनत्व, प्रभु कृपा की बारम्बार याचना, शीघ्र और सद्यः कल्याण कामना की उत्कण्ठा भक्ति-कवियों और सन्तों के सदृश ही है।

३. मनुष्य के द्वारा किया गया पाप या दुष्कर्म का फल तो ईश्वर की न्याय-व्यवस्था में अवश्य भोगना पड़ेगा, किन्तु आर्त्त स्वर में गद्-गद् होकर समर्पण भाव से ईश्वर का स्मरण, जप और चिन्तन करते रहने से हम भविष्य में पाप तथा दुष्कर्म से बच सकेंगे।

४. ब्रह्म और जीव में अंशांशीभाव नहीं है। प्रभु सदा-सर्वदा से हमारे लिए माता, पिता, बन्धु, सखा, राजा, न्यायाधीश, स्वामी, परमगुरु, उपास्य, सेव्य, आधार और परम लक्ष्य है, और आगे भी हमेशा हमारा सम्बन्ध प्रभु से इसी प्रकार का रहेगा। जीव का ब्रह्म में कभी लय नहीं होता। जीव और ईश्वर का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध के समान सेवक-सेव्य, आधेय-आधार, भृत्य-स्वामी, प्रजा-राजा और पुत्र-पिता आदि सम्बन्ध भी है।

५. एकमेव उपासनीय परमेश्वर को छोड़कर अन्य किसी देवता की प्रतिमा या मूर्ति की उपासना और भक्ति से हमारा उत्थान या कल्याण सम्भव नहीं है। किसी भी ऐतिहासिक महापुरुष को परमेश्वर का स्थानापन्न मानना हमारे अज्ञान का सूचक तो है ही, वेदशास्त्रानुमोदित भी नहीं है। इससे हमारा नैतिक पतन और देश की भी अवनति होती है।

६. परमेश्वर से कृपा की याचना या प्रार्थना तभी फलीभूत होगी जब हम अपने सामर्थ्य भर पुरुषार्थ करेंगे। स्वपरिश्रम या पुरुषार्थ के बिना लौकिक या भौतिक समृद्धि तथा आध्यात्मिक उन्नति सम्भव नहीं है। परमेश्वर कभी आलसी, अकर्मण्य और पापकर्मी की सहायता नहीं

करता। आत्मिक उन्नति, मुक्ति या सर्व दुःखों से छुटकारा पाने के लिए परमेश्वर की भक्ति, स्तुति, प्रार्थना और उपासना के साथ-साथ योग के आठ अंगों यम-नियमादि का पालन करना भी अनिवार्य है। योगदर्शन प्रदर्शित अष्टांगमार्ग का सेवन उपासना या भक्ति का ही अंग है।

प्रस्तुति- राजेश आर्य

लेखक व सम्पादक- डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

स्रोत- 'ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज' भाग-२, पृ. ४४८-४४९

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

हमें पहली बार नवलखा महल के बारे में जानने का मौका मिला। यहाँ के रामायण वीथिका, महाभारत वीथिका, स्वतंत्रता सेनानियों, युग ऋषियों तथा आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी को सचित्र देखने का सौभाग्य मिला। इसी के साथ महाराणा प्रताप द्वारा लड़ा गया युद्ध का सचित्रण दृश्य भी हमने देखा। इसके साथ ही सोलह संस्कार का अलग-अलग (झाँकियों) राज्यों की झाँकियों का अवलोकन किया। धन्यवाद।

- लक्ष्मीकान्त सोनी, सांचोर

मैं शाशि अग्रवाल पानीपत से वेद मन्दिर मुखीजा कॉलोनी की संरक्षिका इस नवलखा महल में दूसरी बार आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जो अब देखा वह अद्वितीय और अनुपम देखा। महल के गेट से पहले ही चार महान् ऋषियों के फाइबर चित्र जिनके द्वारा चार वेदों की रचना हुई जिन्होंने मानव निर्माण की और इस सृष्टि के अन्दर जो कुछ भी है उसका ज्ञान देकर हम पर महान् उपकार किया, उसका वर्णन करना तो बहुत मुश्किल है। इतनी सुन्दर पंच महायज्ञ का चित्रण, दूसरी तरफ अनेक राष्ट्र नायकों के चित्र मन को प्रेरणा देने का काम करते हैं। सोलह संस्कारों के बारे में तथा अनेक राज्यों की वेशभूषा में दिखाकर आज की आने वाली भावी पीढ़ी के लिये जो मानव निर्माण का कार्य किया है वह चित्रण बहुत ही सुन्दर है। मिनी थियेटर में ऋषिवर के साथ महान् योद्धाओं का इतिहास तथा महर्षि दयानन्द द्वारा रचित महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद शीशे में दिखाकर बेजोड़ कार्य मन को प्रफुल्लित कर गया। बहुत कुछ लिखने का मन कर रहा है, परन्तु क्या करूँ लिख नहीं सकती। यहाँ के अध्यक्ष अशोक आर्य जी का बहुत-बहुत धन्यवाद। जिन्होंने अपनी पूरी टीम के साथ मिलकर इस पुण्यभूमि को दर्शनीय बना दिया। बाहर से आने वालों तक ऋषि के विचारों को पहुँचाने का कार्य बहुत अच्छे तरीके से किया है।

- शशि अग्रवाल, पानीपत

प्रिय भाई अशोक जी नमस्ते, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र को देखने का दूसरी बार सौभाग्य प्राप्त हुआ
आज के इस नवलखा महल को अपने एक सुन्दर और भव्य रुप देकर इस पुण्य भूमि को विश्व भर में दार्शनिक स्थल बनाने जो कार्य किया है वह बहुत ही प्रशंसनीय है ऋषि देव दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का घूमते हुए शीशे में दिखाना, सोलह संस्कारों के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को संस्कारों का महत्त्व बताना, महापुरुषों के चित्रों के साथ ही उनका जीवन-चरित्र फिल्म के माध्यम से समझाना, मुख्य दरवाजे से पहले वेदों के रचियता चारों ऋषियों की सुन्दर कृति बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करती है। एक तरफ राष्ट्र के महान नायकों के चित्र प्रेरणा देने का कार्य करते हैं तो दूसरी ओर पंच महायज्ञों को करते हुए दिखाना सच में मन आनन्दित कर गया। बहुत कुछ लिखने का मन कर रहा है लेकिन मेरे पास शब्द नही है भगवान आपको सदैव स्वस्थ रखे, दीर्घायु बनाये रहे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

लगभग एक साल पहले जब केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री सत्यपाल सिंह जी ने एक बयान दिया कि डार्विन की Theory गलत है, इतना कहते ही अनेकों बुद्धिजीवियों ने उन पर आक्रमण करना शुरू कर दिया, और अगले ही दिन अनेकों प्रोफेसर्स ने उनके खिलाफ Petition दायर कर दीं।

वहीं नासा के पूर्व वैज्ञानिक प्रोफेसर ओमप्रकाश पाण्डेय जी ने सत्यपाल सिंह जी की बात का समर्थन किया और कहा की डार्विन के बेटे ने खुद विकासवाद को अपने पिता की कल्पना मात्र माना है। उन्होंने भी डार्विन की Theory को गलत माना।

उस समय वैदिक वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी ने सभी बुद्धिजीवियों को चुनौती दी और डार्विन की थ्योरी पर अनेकों प्रश्न लिखकर अनेकों यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर्स को भेजे, लेकिन किसी ने भी उन प्रश्नों का जवाब नहीं दिया।

आइये अब हम देखते हैं कि आचार्य अग्निव्रत जी ने कौन से प्रश्न पूछे थे, उनका पत्र नीचे दिया गया है।

संसार भर के विकासवादियों से प्रारम्भिक प्रश्न

ऐसा नहीं है कि विकासवाद का विरोध कुछ भारतीय विद्वान् ही करते हैं अपितु अनेक यूरोपियन वैज्ञानिक भी इसे नकारते आये हैं।

मैं इसका विरोध करने वाले संसारभर के विकासवादियों से प्रश्न करना चाहता हूँ। ये प्रश्न प्रारम्भिक हैं, इनका उत्तर मिलने पर और प्रश्न किये जायेंगे-

शारीरिक विकास

१. विकासवादी अमीबा से लेकर विकसित होकर बन्दर पुनः शनैः-शनैः मनुष्य की उत्पत्ति मानते हैं। वे बताएँ कि अमीबा की उत्पत्ति कैसे हुई?

२. यदि किसी अन्य ग्रह से जीवन आया, तो वहाँ उत्पत्ति कैसे हुई? जब वहाँ उत्पत्ति हो सकती है, तब इस पृथ्वी पर क्यों नहीं हो सकती?

३. यदि अमीबा की उत्पत्ति रासायनिक क्रियाओं से किसी ग्रह पर हुई, तब मनुष्य के शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति इसी प्रकार क्यों नहीं हो सकती?

४. उड़ने की आवश्यकता होने पर प्राणियों के पंख आने की बात कही जाती है परन्तु मनुष्य जब से उत्पन्न हुआ, उड़ने हेतु हवाई जहाज बनाने का प्रयत्न करता रहा है, परन्तु उसके पंख क्यों नहीं

उगे? यदि ऐसा होता, तो हवाई जहाज के आविष्कार की आवश्यकता नहीं होती।

५. शीत प्रदेशों में शरीर पर लम्बे बाल विकसित होने की बात कही जाती है, तब शीत प्रधान देशों में होने वाले मनुष्यों के रीछ जैसे बाल क्यों नहीं उगे? उसे कम्बल आदि की आवश्यकता क्यों पड़ी?

६. जिराफ की गर्दन इसलिए लम्बी हुई कि वह धरती पर घास सूख जाने पर ऊपर पेड़ों की पत्तियाँ गर्दन ऊँची करके खाता था। जरा बताएँ कि कितने वर्ष तक नीचे सूखा और पेड़ों की पत्तियाँ हरी रहीं? फिर बकरी आज भी पेड़ों पर दो पैर रखकर पत्तियाँ खाती है, उसकी गर्दन लम्बी क्यों नहीं हुई?

७. बन्दर की पूंछ गायब होकर मनुष्य बन गया। जरा कोई बताये कि बन्दर की पूंछ कैसे गायब हुई? क्या उसने पूंछ का उपयोग करना बन्द कर दिया? कोई बताये कि बन्दर पूंछ का क्या उपयोग करता है और वह उपयोग उसने क्यों बन्द किया? यदि ऐसा ही है तो मनुष्य के भी नाक, कान गायब होकर छिद्र ही रह सकते थे। मनुष्य लाखों वर्षों से बाल और नाखून काटता आ रहा है, तब भी बराबर वापिस उगते आ रहे हैं, ऐसा क्यों?

८. सभी बन्दरों का विकास होकर मानव क्यों नहीं बने? कुछ तो अमीबा के रूप में ही अब तक चले आ रहे हैं, और हम मनुष्य बन गये, यह क्या है?

९. कहते हैं कि सांपों के पहले पैर होते थे, धीरे-धीरे वे घिस कर गायब हो गये। जरा विचारें कि पैर कैसे गायब हुए, जबकि अन्य सभी पैर वाले प्राणियों के पैर बिल्कुल नहीं घिसे।

१०. बिना अस्थि वाले जानवरों से अस्थि वाले जानवर कैसे बने? उन्हें अस्थियों की क्या आवश्यकता पड़ी?

११. बन्दर व मनुष्य के बीच बनने वाले प्राणियों की शृंखला कहाँ गई?

१२. विकास मनुष्य पर जाकर क्यों रुक गया? किसने इसे विराम दिया? क्या उसे विकास की कोई आवश्यकता नहीं है?

बौद्धिक व भाषा सम्बन्धी विकास

१. कहते हैं कि मानव ने धीरे-धीरे बुद्धि का विकास कर लिया, तब प्रश्न है कि बन्दर व अन्य प्राणियों में बौद्धिक विकास क्यों नहीं हुआ?

२. मानव के जन्म के समय इस धरती पर केवल पशु पक्षी ही थे, तब उसने उनका ही व्यवहार क्यों नहीं सीखा? मानवीय व्यवहार का विकास कैसे हुआ? करोड़ों वनवासियों में अब तक विशेष बौद्धिक विकास क्यों नहीं हुआ?

३. गाय, भैंस, घोड़ा, भेड़, बकरी, ऊँट, हाथी करोड़ों वर्षों से मनुष्य के पालतू पशु रहे हैं पुनरपि उन्होंने न मानवीय भाषा सीखी और न मानवीय व्यवहार, तब मनुष्य में ही यह विकास कहाँ से हुआ?

४. दीपक से जलता पतंगा करोड़ों वर्षों में इतना भी बौद्धिक विकास नहीं कर सका कि स्वयं को जलने से रोक ले, और मानव बन्दर से इतना बुद्धिमान् बन गया कि मंगल की यात्रा करने को तैयार है? क्या इतना जानने की बुद्धि भी विकासवादियों में विकसित नहीं हुई ? पहले सपेरा सांप को बीन बजाकर पकड़ लेता था और आज भी वैसा ही करता है परन्तु सांप में इतने ज्ञान का विकास भी नहीं हुआ कि वह सपेरे की पकड़ में नहीं आये।

५. पहले मनुष्य बल, स्मरण शक्ति एवं शारीरिक प्रतिरोधी क्षमता की दृष्टि से वर्तमान की अपेक्षा बहुत अधिक समृद्ध था, आज यह ह्रास क्यों हुआ, जबकि विकास होना चाहिए था?

६. संस्कृत भाषा, जो सर्वाधिक प्राचीन भाषा है, उस का व्याकरण वर्तमान विश्व की सभी भाषाओं की अपेक्षा अतीव समृद्ध व व्यवस्थित है, तब भाषा

की दृष्टि से विकास के स्थान पर ह्रास क्यों हुआ?

७. प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थों में भरे विज्ञान के सम्मुख वर्तमान विज्ञान अनेक दृष्टि से पीछे है, यह मैं अभी सिद्ध करने वाला हूँ, तब यह विज्ञान का ह्रास कैसे हुआ? पहले केवल अन्तःप्रज्ञा से सृष्टि का ज्ञान ऋषि कर लेते थे, तब आज वह ज्ञान अनेकों संसाधनों के द्वारा भी नहीं होता। यह उलटा क्रम कैसे हुआ?

भला विचारें कि यदि पशु पक्षियों में बौद्धिक विकास हो जाता, तो एक भी पशु-पक्षी मनुष्य के वश में नहीं आता।

यह कैसी अज्ञानता भरी सोच है, जो यह मानती है कि पशु-पक्षियों में बौद्धिक विकास नहीं होता परन्तु शारीरिक विकास होकर उन्हें मनुष्य में बदल देता है और मनुष्यों में शारीरिक विकास नहीं होकर केवल भाषा व बौद्धिक विकास ही होता है।

इसका कारण क्या विकासवादी मुझे बताएँगे?

आज विकासवाद की भाषा बोलने वाले अथवा पौराणिक बन्धु श्री हनुमान जी को बन्दर बताएँ, उन्हें वाल्मीकीय रामायण का गम्भीर ज्ञान नहीं है।

वस्तुतः वानर, ऋक्ष, गृध, किन्नर, असुर, देव, नाग आदि मनुष्य जाति के ही नाना वर्ग थे।

ऐतिहासिक ग्रन्थों में प्रक्षेपों (मिलावट) को पहचानना परिश्रम साध्य व बुद्धिगम्य कार्य है।

उधर जो प्रबुद्धजन किसी वैज्ञानिक पत्रिका में पेपर प्रकाशित होने को ही प्रामाणिकता की कसौटी मानते हैं, उनसे मेरा अति संक्षिप्त विनम्र निवेदन है-

१. बिग बैंग थ्योरी व इसके विरुद्ध अनादि ब्रह्माण्ड थ्योरी, दोनों ही पक्षों के पत्र इन पत्रिकाओं में छपते हैं, तब कौनसी थ्योरी को सत्य मानें?

२. ब्लैक होल व इसके विरुद्ध ब्लैक होल न होने की थ्योरीज् इन पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं, तब किसे सत्य मानें?

३. ब्रह्माण्ड का प्रसार व इसके प्रसार न होने की थ्योरीज् दोनों ही प्रकाशित हैं, तब किसे सत्य मानें?

ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। इस कारण यह आवश्यक नहीं है कि हमें एक वर्गविशेष से सत्यता का प्रमाण लेना अनिवार्य हो?

हमारी वैदिक एवं भारतीय दृष्टि में उचित तर्क, पवित्र गम्भीर ऊहा एवं योगसाधना (व्यायाम नहीं) से प्राप्त निष्कर्ष वर्तमान संसाधनों के द्वारा किये गये प्रयोगों, प्रक्षेपणों व गणित से अधिक प्रामाणिक होते हैं।

यदि प्रयोग, प्रेक्षण व गणित के साथ सुतर्क, ऊहा का साथ न हो, तो वैज्ञानिकों का सम्पूर्ण श्रम व्यर्थ हो सकता है।

यही कारण है कि प्रयोग, परीक्षणों, प्रेक्षणों व गणित को आधार मानने वाले तथा इन संसाधनों पर प्रतिवर्ष खरबों डॉलर खर्च करने वाले विज्ञान के क्षेत्र में नाना विरोधी थ्योरीज् मनमाने ढंग से फूल-फल रही हैं और सभी अपने को ही सत्य कह रही हैं।

यदि विज्ञान सर्वत्र गणित व प्रयोगों को आधार मानता है, तब क्या कोई विकासवाद पर गणित व प्रयोगों का आश्रय लेकर दिखाएगा?

इस कारण मेरा सम्मान के योग्य वैज्ञानिकों एवं देश व संसार के प्रबुद्ध जनों से अनुरोध है कि प्रत्येक प्राचीन ज्ञान का अन्धविरोध तथा वर्तमान पद्धति का अन्धानुकरण कर बौद्धिक दासत्व का परिचय न दें।

तार्किक दृष्टि का सहारा लेकर ही सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग करने का प्रयास करें।

हाँ, अपने साम्प्रदायिक रूढ़िवादी सोच को विज्ञान के समक्ष खड़े करने का प्रयास करना अवश्य आपत्तिजनक है।

अध्यक्ष- श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
वेद विज्ञान मन्दिर; भागल-भीम, भीनमाल

गंगा अशुद्ध हो गई है

गतांक से आगे .....

महाभारत में प्रक्षेप रामायण की अपेक्षा कम नहीं है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास के अनुसार मुल ग्रन्थ (= जय) के चार सहस्र चार सौ श्लोकों को व्यास जी ने लिखा परन्तु 'भारत' नाम देकर वैशम्पायन आदि ने इसे दश सहस्र श्लोकों का बना दिया। 'महाभारत' नाम बाद में सौति ने लिखा व कुछ और श्लोक जोड़े। महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज के पिता के शासनकाल में इसके श्लोकों की संख्या पच्चीस सहस्र व भोज की आधी उम्र में तीस सहस्र तक यह संख्या पहुँच गई थी, जबकि आज के महाभारत का पोथा लगभग एक लाख श्लोक लिए हुए है। इस ग्रन्थ पर लगभग ६० वर्षों तक निरन्तर ५० अनुसन्धानकर्त्ता प्रोफेसरों ने शोधकार्य भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पुणे के तत्वावधान में किया है। उन्होंने लगभग १००० पाण्डुलिपियाँ, देश-विदेश से एकत्रित कीं व यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि आरम्भ में 'जय' में ८८०० श्लोक थे, जबकि आज महाभारत में लगभग एक लाख श्लोक उपलब्ध हैं। यह प्रक्षेप विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न अवसरों पर किया गया। पूरे ग्रन्थ में यत्र-तत्र परस्पर विरोध तो है ही, सम्भव प्रमाण के विपरीत भी कई घटनाएँ व संवाद समाहित हैं। गीता को भले ही एक पृथक् ग्रन्थ चलाकर आज प्रकाशक बेच रहे हैं परन्तु वास्तव में यह महाभारत का ही भाग है। महाभारत में प्रक्षेप हुआ है तो कैसे सम्भव है कि गीता में प्रक्षेप न हुआ हो। गीता (७/२४) में कृष्ण जी स्वयं को निराकार घोषित करते हैं तो गीता (४/७) में ही स्वयं को साकाररूप में प्रकट (= अवतार) होने की घोषणा भी करते हैं।

प्रक्षेप केवल ग्रन्थों में उपरोक्त रूप में तो हुआ ही है, वैदिक सिद्धान्तों, मान्यताओं व तथ्यों में मिलावट की अन्य विधियाँ भी हैं। मूल ग्रन्थ के विपरीत अपना ग्रन्थ लिखना अन्य विधि है। उदाहरण स्वरूप 'रामचरित मानस' को लिया जा सकता है। राम के समकालीन वाल्मीकि ने राम को एक महापुरुष के रूप में प्रस्तुत किया परन्तु तुलसीदास ने संवत् १६३१ वि. में राम को महापुरुष नहीं रहने दिया अपितु ईश्वर बनाकर हमसे परे कर दिया। हम जीव ईश्वर बन नहीं सकते, अतः तुलसीदास के ग्रन्थ में वर्णित राम के कार्य हम कर नहीं सकेंगे।

दूसरा प्रमाण पुराणों का है। महाभारत में जिस कृष्ण का तेजस्वी, योगेश्वर व आप्तपुरुष का चरित्र प्रस्तुत है, उसे ब्रह्मवैवर्त पुराण व भागवत पुराण में विकृत कर दिया। जिस राधा का महाभारत में एक बार भी नाम उपलब्ध नहीं है, उन पुराणकारों ने कृष्ण का उसके साथ अश्लील, अनैतिक व चरित्रहीनता का सम्बन्ध जोड़कर आने वाली पीढ़ियों के लिए सदाचारी, धर्मात्मा व राष्ट्ररक्षक का कृष्ण के आदर्श चरित्र को ही हमसे छीन लिया व कृष्ण को लंपट, छलिया व भोगी बना दिया।

प्रक्षेप की एक तीसरी विधि है। सच्चे अर्थों को बदलकर मनचाहे हानिकारक अर्थ कर देना। प्रमाण के तौर पर हम वाल्मीकि रामायण का यह श्लोक प्रस्तुत करते हैं-

एतत्तु दृष्यते तीर्थं सेतुबंध इति ख्यातां।
अत्र पूर्वम् महादेवः प्रसादमकरोत्प्रभुः।।

– वाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड १२३ वां सर्ग

अर्थ- विभीषण के राज्याभिषेक के पश्चात् श्री राम पुष्पक विमान में भगवती सीता, भाई लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव व हनुमान संग बैठकर अयोध्या को जब लौट रहे थे तो श्री राम ने सीता को विमान से नीचे व दाएँ-बाएँ के उन स्थानों का परिचय देते हुए कहा (जहाँ-जहाँ सीता की अनुपस्थिति में महत्वपूर्ण कार्य किए थे) 'हे वैदेहि! यह समुद्र का दूसरा तट= उत्तर-तट दिखाई दे रहा है जो सेतुबंध के नाम से प्रसिद्ध है। यह वह स्थान है, जहाँ पर सर्वव्यापक देवों के देव महादेव परमात्मा ने हमारे ऊपर कृपा की थी। (जिसके सहाय से समुद्र पर पुल बनाकर हम तुम्हें ले आये।)'

इस श्लोक में पौराणिक शिव देवता का तनिक भी संकेत नहीं है परन्तु पौराणिक कथित विद्वानों, लेखकों व प्रचारकों ने इस श्लोक में प्रयुक्त महादेव शब्द का अर्थ शिव प्रस्तुत करने का दुष्कार्य करके यह मान्यता स्थापित कर दी है कि राम जी तो शिव के भक्त थे।

उससे मिलता-जुलता एक अन्य प्रसंग हमारे कथन का प्रमाण है-

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्काराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।

– यजुर्वेद १६/४१

इसमें आये शंकर व शिव शब्द परमपिता परमात्मा के शान्ति व कल्याणकारक अर्थों में आये हैं परन्तु पौराणिक पण्डितों ने पूर्वोक्त शिव बाबा के अर्थ में प्रचलित कर दिए। 'ओं नमः शिवाय' का अर्थ सहित जप करते हुए शिवरात्रि के दिन आप पौराणिकों को देख सकते हैं।

गंगा जल में यत्र-तत्र प्रदूषण हुआ व हो रहा है। हुगली के किनारे पर खड़े व्यक्ति को शुद्ध जल दो तरीकों से मिल सकता है। प्रथम वह गंगा के आदि स्रोत पर जाए, जहाँ हर समय शुद्ध जल उपलब्ध है। दूसरा तरीका यह है कि वह अपने नगर की गंगा के जल को फिल्टर, छलनी, या वस्त्र से छानकर शुद्ध रूप से ग्रहण करे अन्यथा अशुद्ध जल से वह अस्वस्थ है व रहेगा ही। वैदिक-ज्ञान की मान्यताओं व इतिहास के तथ्यों के प्रक्षिप्त तट पर खड़े हमें ज्ञान के आदिस्रोत अर्थात् वेदों की ओर वापिस मुड़ना चाहिए या जिस रूप में आज ग्रन्थ हमें मिल रहे हैं, उन्हें तर्क, प्रमाण, ऊहा व युक्ति की छलनी से छानकर ही ग्रहण करें क्योंकि ये ग्रन्थ विष सम्प्रक्तान्न तुल्य हेय एवं त्याज्य हैं। राजनैतिक व आर्थिक घोटालेबाज आज दनदना रहे हैं। धार्मिक, ऐतिहासिक घोटालेबाजों का विगत छः सहस्र वर्षों से हमारे समाज के मन, मस्तिष्क व आत्मा पर साम्राज्य है। ये ज्ञान-घोटाले अन्य सब प्रकार के घोटालों के जन्मदाता हैं। शुद्ध ज्ञान से शुद्ध आचरण का जन्म होता है। अतः ज्ञान गंगा में पड़े प्रदूषण को दूर करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

– पंडित इन्द्रजित् देव
चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट,
यमुनानगर, हरियाणा

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य (अध्यक्ष-न्यास) | भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | डॉ. अमृत लाल तापड़िया (संयुक्तमंत्री-न्यास)

पुदीना
(एक बहु उपयोगी श्रेष्ठ औषध)

परिचय- इसका क्षुप उग्रगंधी होता है। इसके पत्र दंतुर एवं कोमल होते हैं। पुष्प दण्ड मृदु होता है जिस पर फूलों के गुच्छे पाये जाते हैं। यह भारत में सर्वत्र तथा यूरोप व पश्चिम एशिया में पाया जाता है। इसकी लगभग चालीस सुगन्धित जातियाँ यूरोप, चीन, ब्राजील व जापान में पाई जाती हैं।

गुण-कर्म

गुण- लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण। **रस-** कटु। विषाक- कटु। **वीर्य-** उष्ण। **दोष कर्म-** कफ वात शामक।

उपयोग- भोजन को स्वादिष्ट बनाने में कई साग-सब्जियों एवं चूर्ण चटनियों का प्रयोग किया जाता है। चटनियों में पुदीना का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है। ताजा पुदीने की चटनी बनाकर खाई जाती है एवं सुखाने के बाद इसका चूर्ण बनाकर भी दही, छाछ, रायते आदि में मिलाकर खाया जाता है। यह भोजन में रुचि बढ़ाने वाला, अग्निमांद्य को दूर करने वाला है। वजन में, आध्मान (अफारा) होने पर, दस्त व कृमि रोगों में पुदीना की चटनी खिलाते हैं। यह आमाशय को शक्ति देता है, हिचकी बन्द करता है। पेट की खराबी से उत्पन्न होने वाली बेचैनी व मितली होने पर पुदीने का रस पिलाने से शीघ्र लाभ होता है। अंजीर के साथ पुदीना खाने से सीने व फेफड़ों में जमा हुआ कफ निकल जाता है। जहरीले जन्तुओं के काटने पर दंश स्थान पर पुदीने का रस लगा देने से विष का शमन होने लगता है। चूहे के काटे स्थान पर पुदीने की पुल्टिस बाँध देने से विषशमन हो जाता है। पुदीने के पत्तों को पीसकर पुल्टिस बनाकर जख्म पर बाँधने से जख्म के कीड़े मर जाते हैं। जिन स्त्रियों का मासिक धर्म खुलकर नहीं आता उन्हें पुदीने का रस गर्म कर पिलाने से अल्पार्तव की समस्या मिट जाती है।

विशिष्ट रोगों में पुदीना

लू लगने पर- ग्रीष्म काल में पुदीने की चटनी तथा प्याज के नियमित सेवन से लू लगने की सम्भावना नहीं रहती।

हैजा- हैजे में पुदीने का अर्क व अजवायन सत्व देते रहने से रोगी शीघ्र ठीक हो जाता है।

मुख की दुर्गन्ध- मुख से दुर्गन्ध आती हो तो पुदीने को पीसकर पानी में घोलकर उस पानी से दिन में दो तीन बार कुल्ले करने से मुख की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

अनियमित रक्तचाप- पुदीना उच्च एवं निम्न रक्तचाप (हाई एण्ड लो ब्लड प्रेशर) को नियन्त्रित करता है। इसके लिए पुदीने की चटनी में काली मिर्च मिलाकर सेवन करें।

कैंसर- पुदीना एवं तुलसी की समान मात्रा मिलाकर बनाये गये चूर्ण का नियम पूर्वक ५ ग्राम की मात्रा में दिन में एक बार सेवन करने से मनुष्य कैंसर से सदैव बचा रह सकता है।

अम्लपित्ताजन्य आमाशय शूल- अम्लपित्त (एसीडिटी) की अवस्था में जब रोगी के आमाशय में तीव्र शूल होता है तब, अर्क सौंफ ४ चम्मच, पुदीनहरा (डाबर) ४ बून्दे व १ चम्मच ग्लुकोज पाउडर मिलाकर देने से तुरन्त आराम हो जाता है।

प्यास- तृषाशान्ति हेतु सूखा पुदीना, खस तथा बड़ी इलायची ५०-५० ग्राम लेकर ४ किलो पानी में डालकर उबालें। किलोशेष रहने पर छानकर मिट्टी के पात्र में रख लें। थोड़ा-थोड़ा यह जल पिलाते रहने से प्यास शान्त हो जाती है व जी मिचलाना, बेचैनी आदि में भी आराम हो जाता है।

- डॉ. वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त चिकित्साधिकारी
आयुर्वेद विभाग, उदयपुर

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

सच्चे शिव की प्राप्ति एवं मृत्यु पर विजय, यह दो लक्ष्य लेकर मूल शंकर ने गृह का त्याग किया था। पिताजी के पहरेदारों को चकमा देने के बाद वे इस खोज में पूर्ण मनोयोग से प्रवृत्त हो गए। ब्रह्मचर्य आश्रम में रहते हुए जहाँ भी सुनते थे कि कोई योगी आए हैं वही चैतन्य जी पहुँच जाते थे। कहीं निराशा हाथ लगती थी तो कहीं किंचित आशा, परन्तु शुद्ध चैतन्य निराश नहीं हुए। एक दिन प्रातःकाल का भोजन बना रहे थे पीछे से आवाज आई। क्या हो रहा है मित्र? शुद्ध चैतन्य ने मुड़ के देखा तो उनके मित्र वही ब्रह्मचारी जी थे। शुद्ध चैतन्य ने कहा कि खाना बना रहा हूँ, साथ ही यह भी कहा- 'मेरा बहुत सारा समय इस सब में निकल जाता है और मैं जिस रत्न को पाने के लिए घर से निकला हूँ उसको प्राप्त करने में पूरा समय नहीं दे पाता हूँ।' मित्र ब्रह्मचारी ने सलाह दी कि आप संन्यास ले लो। गृहस्थ में तो आपको प्रवेश होना ही नहीं है संन्यास लेने से आपको भोजन आदि में जो समय आप लगाते हैं, वह बच सकेगा। शुद्ध चैतन्य उनकी बात से सहमत होते हुए ऐसे गुरु की तलाश में लग गए जो उन्हें संन्यास दे सके। परन्तु उनकी कम उम्र को देखते हुए उन्हें संन्यास देने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। ऐसे में एक दाक्षिणात्य संन्यासी पूर्णानन्द सरस्वती वहाँ पधारे। चाणोद से डेढ़ कोस की दूरी पर उन्होंने अपना डेरा डाला। उनके साथ एक ब्रह्मचारी जी भी थे। शुद्ध चैतन्य ने अपने मित्र के साथ स्वामी जी के श्री चरणों में निवेदन किया कि वे उन्हें संन्यास प्रदान करें। आरम्भिक हिचक के बाद पूर्णानन्द जी ने उनको संन्यास प्रदान कर दिया और 'दयानन्द सरस्वती' उनका नाम रख दिया।

यही दयानन्द सरस्वती आगे चलकर दुःखी देश भारत की ढाल बन गए। भारत के गौरव को, वेदों की अस्मिता को और आर्य समाज नाम के लोक कल्याणकारी संगठन को स्थापित कर इन्होंने ही भारत में सर्व सुधार की नींव रखी।

अब दयानन्द पूर्ण रूप से योगियों की तलाश में जुट गए। जहाँ से भी कोई समाचार मिलता कि कोई सिद्ध योगी अमुक-अमुक स्थान पर हैं तो दयानन्द उनका अनुसंधान करने के लिए निकल पड़ते। रास्ता चाहे कितना भी कठिन हो, लक्ष्य प्राप्ति हेतु वह इसका तनिक भी ध्यान नहीं रखते। कभी-कभी जंगलों में कंटीली झाड़ियों में सारा शरीर छिल जाता, बर्फीली नदियों में पूरा शरीर सुन्न हो जाता आसन्न मृत्यु का आभास भी होता, परन्तु सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त कर दयानन्द लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ते गए।

चाणोद करनाली में स्वामी दयानन्द को दो योगियों का साथ मिला जिन्होंने स्वामी जी के चित्त की उस अदम्य लालसा को समझा जो कि योग के प्रति उनकी थी। इन योगियों ने उनको जिनका कि नाम ज्वालानन्द पुरी और शिवानन्द गिरि था। दयानन्द की योग पिपाशा को बहुत हद तक तृप्त किया और यह भी कहा कि एक महीने पश्चात् अहमदाबाद आइएगा तब हम आपको योग साधन के सम्पूर्ण गुढ़ तत्व क्रियाओं सहित भली-भाँति समझा देंगे और कालान्तर में ऐसा ही हुआ। स्वामी जी ने स्वयं लिखा कि उन्हीं योग गुरुओं ने उनके ऊपर कृपा करके उनको निहाल कर दिया।

उखीमठ के महन्त स्वामी जी के गुणों पर मोहित हो गए। उनकी इच्छा हुई कि यह युवक उनका शिष्य बन कर यहीं पर रह जाए। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि तुम अगर मेरी बात मानोगे तो मठ की सारी सम्पत्ति के तुम स्वामी हो जाओगे। दयानन्द ने विनम्रता के साथ परन्तु दृढ़ स्वर में कहा कि- यह सब ऐश्वर्य मेरे लिए कोई मायने नहीं

रखता। इससे कई गुना ज्यादा सम्पत्ति मैं अपने पिता के घर में छोड़ कर के आया हूँ। स्वामी जी ने ओजपूर्ण शब्दों में कहा मैं सत्य योगविद्या और मोक्ष चाहता हूँ। जब तक यह प्रयोजन सिद्ध ना होगा तब तक तपश्चर्या करता हुआ मनुष्यमात्र के कर्तव्य, स्वदेश उपकार को बराबर करता रहूँगा। योगियों और सिद्ध पुरुषों के अनुसंधान के इसी उद्देश्य को लेकर के एक दिन वे प्रातः ही निकल पड़े। ऐसे विकट स्थलों में ही सिद्ध योगी विराजते हैं यह जान, उनके सत्संग के लिए कठिनाइयों को पुष्प समान समझ लिया। एक स्थान पर पहुँचे तो रास्ता चारों तरफ से बन्द दिखाई दिया। भीषण बहाव और बर्फ के नुकीले टुकड़ों से भरी हुई अलकनन्दा को पार करने के अलावा और कोई

रास्ता न था। दयानन्द ने अलकनन्दा को पार करने का निश्चय किया परन्तु आधे रास्ते पहुँचते-पहुँचते बर्फ के नुकीले टुकड़ों ने उनके पूरे शरीर को विशेष रुप से जांघ से नीचे तक के हिस्से को लहूलुहान कर दिया। लगा जैसे पार नहीं पहुँच पाएँगे। परन्तु सम्पूर्ण आत्मबल को संचित करते हुए दयानन्द पार पहुँचे, परन्तु गिर पड़े। उनके शरीर में चलने की बिल्कुल शक्ति नहीं थी। दूर-दूर तक कोई नहीं था। लगा जैसे अब जीवन का अन्त हो जाएगा। परन्तु प्रभु इच्छा प्रबल होती है। उस निर्जन जगह में अचानक से दो पहाड़ी पुरुष निकल कर के आए और स्वामी जी को अपने डेरे तक ले जाने का प्रस्ताव दिया। स्वामी जी के शरीर में बिल्कुल शक्ति शेष नहीं थी, उन्होंने उनके प्रस्ताव को विनम्रता पूर्वक अस्वीकृत कर दिया। और जब शरीर में पर्याप्त बल का संचार हुआ तो उठ करके चल दिए।

पर आज के अनुभव से क्या वे घबरा गए? क्या उनकी अभिलाषा की अग्नि मंद पड़ गई? जी नहीं संकल्प और दृढ़ हुआ, जिसे हम उनके आगे के जीवन में पग पग पर देखते हैं।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

समाचार

आर्य समाज हिरण मगरी के निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर का वार्षिक निर्वाचन दिनांक १ मई २०२३ को हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से श्री भँवर लाल आर्य पुनः

प्रधान पद पर निर्वाचित किए गये। मंत्री पद पर आचार्य वेदमित्र आर्य, उपप्रधान पद पर कृष्ण कुमार सोनी, संजय शांडिल्य, उपमंत्री श्रीमती सरला गुप्ता, सुभाष कोठारी, कोषाध्यक्ष रमेश जायसवाल, प्रचार मंत्री हजारी लाल आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष रामदयाल निर्वाचित किए गये। अन्तरंग सदस्यों में डॉ. अमृत लाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, निरंजन नेभनानी, ललिता मेहरा, अम्बालाल सनाढ्य निर्वाचित किए गये। श्री इन्द्र प्रकाश यादव, रामदयाल मेहरा, श्रीमती सरला गुप्ता को पुरोहित सूची में सम्मिलित किया गया। श्रीमती पुष्पा सिंधी को दयानन्द कन्या विद्यालय की मानद निदेशक बनाया गया।

निर्वाचन अधिकारी श्री प्रकाश चन्द जी श्रीमाली के निर्देशन में हुए चुनाव से पूर्व, मंत्री ने आर्य समाज हिरण मगरी की वार्षिक गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष ने वार्षिक आय-व्यय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

– वेद मित्र आर्य, मंत्री

दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिक उत्सव ८ मई २०२३ को हर्षोल्लास से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री सत्यनारायण जी आसेट, विशिष्ट अतिथि श्री रामनिवास जी गदिया

थे। इस अवसर पर विद्यालय की बालिकाओं ने रंगारंग कार्यक्रम के साथ गायत्री मंत्र, आर्य समाज के नियम आदि प्रस्तुत किये। डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया। विद्यालय की मानद निदेशक श्रीमती पुष्पा सिंधी ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। मंत्री कृष्णकुमार सोनी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

– रामदयाल मेहरा

प्रतिस्वर

प्रतिष्ठा में, मान्य श्री अशोक जी आर्य, सादर नमस्ते

यह सराहनीय है कि आर्य समाज की स्थापना के १५० वर्ष और २००वें जन्मदिन के बाद भी स्वामी दयानंद की विरासत आज भी जीवित है। यह, अन्य बातों के अलावा, आपके प्रयासों के कारण है। हालाँकि, जैसा कि दुनिया अभी भी वैदिक ज्ञान से रहित है, पूरे वेदों को उचित अनुवाद विश्व की सभी भाषाओं में (अनुवाद) करने के लिए एक परियोजना शुरू की जानी चाहिए और दुनिया के सभी विश्वविद्यालयों और संगठनों के पुस्तकालयों को इसकी प्रतियां देनी चाहिए, तभी दुनिया सही शान्ति, सुरक्षा और आध्यात्मिकता का उचित अभ्यास और काम करने के लिए तैयार होगी। हम आशा करते हैं कि इस पर भी प्राथमिकता से ध्यान दिया जाएगा। अब युवाओं को वेदों के सही संदेश को विश्व की सभी भाषाओं में पहुंचाने के लिए तैयार करना चाहिए। इस प्रकार कृण्वन्तो विश्वं आर्यम् एक तथ्य बन जाएगा। सत्यार्थ प्रकाश न्यास जो अच्छा काम कर रहा है, उसके लिए एक बार फिर से बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद। शुभकामनाओं सहित, सप्रेम नमस्ते!

आपका ही- सूर्य प्रसाद बीरे, हॉलैण्ड आर्य समाज

Qualified employed match for Arora boy 22.2.95 2.00 am Jalandar, Ht 5'-8", B.Tech. Hons M.Tech. (IIT Jodhpur) in Mech job in MNC Gurugaon, pkg 13 Lac. WhatsApp 83605-36336 (CL22086966)

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री आर. सी. आर्य; कोटा (राज.), श्री नन्दलाल जी आर्य, बेतिया, बिहार।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ 16 पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

वेद मनुष्यमात्र के लिए

वेदों के सर्वोपरि महत्वपूर्ण व ईश्वरोक्त होने को निरूपित करते हुए महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास के अन्त में लिखते हैं- 'गायत्र्यादि छन्द, षड्जादि और उदात्तोनुदात्तादि स्वर के ज्ञानपूर्वक गायत्र्यादि छन्दों के निर्माण करने में सर्वज्ञ के बिना किसी का सामर्थ्य नहीं है कि इस प्रकार सर्वज्ञानयुक्त शास्त्र बना सकें। हाँ वेद को पढ़ने के पश्चात् व्याकरण, निरुक्त और छन्द आदि ग्रन्थ ऋषि-मुनियों ने विद्याओं के प्रकाश के लिए किए हैं। जो परमात्मा वेदों का प्रकाश न करे तो कोई भी न बना सके। इसलिए वेद परमेश्वरोक्त है। इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिए और जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना कि हमारा मत वेद अर्थात् जो कुछ वेदों में कहा है, हम उसको मानते हैं।'

वेद ईश्वरप्रणीत

अरेऽस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः॥ - बृहदारण्यक उपनिषद् २/४/१०

अरे मनुष्य! ऋग्, यजुः, साम और अथर्व उस परमपूज्य परमात्मा के ही निःश्वास हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश एक अद्भुत ग्रन्थ है तथा इसके चौदह समुल्लास अमूल्य शिक्षाओं से भरे हुए हैं। उनमें सातवें समुल्लास का विशेष महत्व इसलिए है क्योंकि इसमें वह मूलभूत चर्चा की गई है जिसे लेकर आज सारा संसार भ्रमित है तथा इस भ्रम के कारण धर्म और ईश्वर के नाम पर मानवता का खून बहाया जा रहा है। महर्षि ने परमात्मा की उपासना का लाभ बताया है 'उस जैसे गुण-कर्म और स्वभाव स्वयं के भी करना।' मगर आज का मानव परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव को तो आत्मसात् नहीं कर सका उल्टा परमात्मा को ही अपने जैसा बनाने के प्रयास में लगा हुआ है। उसका आकार बना दिया, उसके लिए घर बनाने लगे, वस्त्र आदि पहनाने लगे, स्नान कराने लगे, विवाह तक कराने लगे तथा उसे भोजनादि भी खिलाने लगे। अनेक मन्दिरों में ग्रीष्म ऋतु में मूर्ति के लिए कूलर लगाये जाते हैं। परमात्मा का इस प्रकार से आज उपहास किया जा रहा है। कुछ लोगों ने उसे चौथे आसमान पर माना, कुछ ने सातवें आसमान पर माना, किसी के अनुसार वह वैकुण्ठ में शेषनाग की शैय्या पर आराम कर रहा है। इस प्रकार लोगों ने उसे किसी न किसी स्थान विशेष में कैद करके रख दिया है। जहाँ एक ओर किसी ने कहा कि वह अवतार लेता है तो कुछ कहने लगे कि वह अपना कोई विशेष पैगम्बर या पीर आदि भेजता है। आज तो जैसे भगवानों और तथाकथित गुरुओं की भीड़ ही खड़ी हो गई है। आज परमात्मा की उपासना के स्थान पर सांसारिक व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। और तो और अभिताभ बच्चन तथा सचिन तेंदुलकर के भी मन्दिर बना दिए गये है। इस प्रकार की काल्पनिक तथा बेसिर पैर की बातों को देखकर नई पीढ़ी नास्तिकता की ओर बढ़ने लगी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों का प्रमाण देकर तथा अनेक प्रकार के तर्क और प्राचीन ऋषि-मुनियों की सम्मति के आधार पर निराकार परमात्मा की बात दृढ़ता के साथ संसार के लोगों के समक्ष रखी। व्यक्ति पूजा के स्थान पर उन्होंने एक परमपिता परमात्मा की उपासना का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने प्रमाण देकर सिद्ध किया कि परमात्मा अवतार नहीं लेता और न ही कोई व्यक्ति परमात्मा का स्थान ले सकता है। परमात्मा की उपासना न करने वालों को उन्होंने कृतघ्न कहा है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at flipkart snapdeal amazon.in Myntra
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 June-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिस को लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास पृष्ठ २७३

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर